₹ २०

ISSN-2321-3981

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

श्रावण २०७६ अगस्त २०१९

Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

दिल्ली शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ

12 अगस्त

प्रातः 11:30 बजे

राजनीति विज्ञान

वैकल्पिक विषय

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ

द्वारा- डॉ. मंजेश कुमार

22 जुलाई

प्रातः 8:00 बजे

AWAKE - 2019

Answer Writing And Knowledge Enrichment Programme - 2019

हिंदी माध्यम में उत्कृष्ट परिणाम सुनिश्चित करने के लिये फोकस्ड कार्यक्रम

मुख्य परीक्षा 2019 में शामिल हो रहे सभी अभ्यर्थियों के लिये पूर्णतः निःशुल्क

प्रारंभ : 22 जुलाई, शाम 6:30 बजे

डॉ. विकास दिव्यकीर्ति तथा विभिन्न खंडों के विशेषज्ञ अध्यापकों की सक्रिय भागीदारी

लगभग 50 दिवसीय कक्षाएँ

नोटः यह सत्र उन विद्यार्थियों के लिये है जो इस बार सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में शामिल हो रहे हैं। इस विशेष कार्यक्रम में सीटों की कुल संख्या 200 है। कार्यक्रम में नामांकन 'पहले आओ-पहले पाओ' के आधार पर किया जाएगा। नामांकन के लिये प्रारंभिक परीक्षा के प्रवेश-पत्र की फोटोकॉपी संलग्न करना अनिवार्य है।

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें : 9205885197, 87501-87501, 8448485519

प्रयागराज शाखा

सामान्य अध्ययन

ओरिएन्टेशन क्लास के साथ बैच प्रारंभ

28 जुलाई

प्रातः 11:15 बजे

(भूगोल खंड से कक्षा प्रारम्भ)

हिन्दी साहित्य

वैकल्पिक विषय (वीडियो क्लासेज़)

द्वारा- डॉ. विकास दिव्यकीर्ति

भूगोल

वैकल्पिक विषय

द्वारा - श्री वी.के. त्रिवेदी

इतिहास

वैकल्पिक विषय

द्वारा - श्री अख्तर मलिक

दिल्ली- 8448485519, 8448485520, 87501-87501 | प्रयागराज-8448485518, 8929439702, 87501-87501

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

श्रावण	२०७६	▪ वर्ष ४०
अगस्त	२०१९	▪ अंक २

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क

४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००३३९, ४३९
e-mail: devputraindore@gmail.com
editordevputra@gamail.com

सीधे 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के खाते में राशि जमा करने हेतु –
खाता संख्या – 53003592502
IFSC-SBIN0030359
आलोक : कृपया केवल 5000 रु. से अधिक की राशि जमा करने हेतु ही कोर बैंकिंग सुविधा का उपयोग करें।

चिल्ड्रन सोसायटी की गुड चाइल्डहुड रिपोर्ट-2017, दावा-2010 के बाद सबसे ज्यादा 40% बच्चों में समाया डर

सात साल में सबसे कम हो गई ब्रिटिश बच्चों की खुशियां, हर तीसरी लड़की को पीछा किए जाने और हर चौथे लड़के को पीटे जाने का डर

52% यानी आधी से अधिक लड़कियां डर में जीती हैं

अपनी बात

प्यारे भैया-बहिनो,

विगत दिनों समाचार पत्रों में ब्रिटेन की 'चिल्ड्रन सोसायटी' ने 'गुड चाइल्डहुड' नामक एक सर्वेक्षण किया था। पूरे देश के हजारों बच्चों से प्रश्नों के माध्यम से हुए इस सर्वेक्षण के निष्कर्ष बहुत चिंताजनक थे। पिछले ८-१० वर्षों में वहाँ के बच्चों में विशेषकर बेटियों में एक अजीब सा भय घर कर गया है और वह भय है शारीरिक प्रताड़न का भय। इस कारण उनकी खुशियाँ भी बहुत कम हो गई हैं।

मैं मानता हूँ कि भारत के बच्चे ब्रिटिश बच्चों की तुलना में बहुत साहसी हैं, मस्त रहने वाले हैं किन्तु यह अनजाना भय तो अब थोड़ा-थोड़ा अपने देश के बच्चों में भी दिखाई देने लगा है। विशेषकर हमारी बहनों में कुछ ज्यादा ही। समाचार पत्रों में प्रतिदिन के छपने वाले और टी.वी. पर दिखाई देने वाले भयावह समाचार निश्चय ही आप सबको भी चिंता में डालते ही होंगे।

दादाजी-दादीजी जब कहते होंगे- "हमारा जमाना तो ऐसा नहीं था।" तब आपको लगता होगा "तो क्या यह सब हमारे कारण हो रहा है?" बात तो बुजुर्गों की ठीक है। उस युग में और आज के युग में विश्वास का अंतर आ गया है। इस अविश्वास को 'विश्वास' में बदलने के लिए उस सर्वेक्षण के निष्कर्ष में कहा गया है- "समाज ही इन बच्चों की खुशी लौटा सकता है।" समाज यानी कौन? हम सब ही। तो आइए कुछ संकल्प लें। घर हो, मोहल्ला हो या अपना विद्यालय हर बहन हमारी उपस्थिति से स्वयं को सुरक्षित अनुभव करे। उसे लगे उसका भैया उसके साथ है। कोई भी अकेली बहन किसी मार्ग पर, किसी वाहन में जाती मिले तो हमें उनकी सुरक्षा हमारी व्यक्तिगत जवाबदारी लगे। यदि किसी भी व्यक्ति को हम कोई गलत व्यवहार करता देखें तो तुरंत जोर से चिल्लाकर या शोर मचाकर उसका प्रतिकार करें। अपने साथियों में, मित्र मण्डली में मजाक में भी कभी किसी बहन के विषय में कोई अनर्गल चर्चा न होने दें।

आखिरकार हम सबकी घर में कोई प्यारी सी बहन तो है ही। समाज की बहनें भी हमें अपनी बहन सी लगने लगी तो समझो भारत का यह महान रक्षाबंधन पर्व सार्थक हो गया।

स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं सहित...

आपका
बड़ा भैया

अनुक्रमणिका

कहानी

- मित्रता के गीत - डॉ. चेतना उपाध्याय ०५
- माटी का मोल - सीमा व्यास १८
- अनमोल उपहार - डॉ. सेवा नन्दवाल ३२
- सबसे अधिक पानी - ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश' ४०
- सोहम् और सलोनी - सुषमा दुबे ४६

अनुवाद

- इमली का पेड़ -पद्मा चौगांवकर ०७

प्रसंग

- मेरा कमरा व्यवस्थित.. - सांवलाराम नामा ०६
- परम हितैषी - डॉ. भारतभूषण ओझा १५
- अमर शहीद रामू - भानुप्रताप सिंह २८

लघुकथा

- राखी की सार्थकता - मीरा जैन १५

नाटिका

- स्वतंत्रता की गाथा - डॉ. प्रीति प्रवीण खरे १०

कविता

- देखो जरा हमारा हाल - रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस' १४
- मेरी मैया - सदाशिव कौतुक ३६
- खत्म हो गया जेब खर्च - डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ३७
- कभी नहीं झुकने वाले - प्रमोद सोनवानी ३८
- स्वस्थ सभी हम... - मनमोहन गुप्ता 'अभिलाषी' ४२
- अंबर की रजाई - डॉ. अनुपमा गुप्ता ४९

रेखाचित्र

- मोहन बाबू - दिनेश प्रताप सिंह 'चित्रेश' २२

आलेख

- श्रीकृष्ण जन्माष्टमी - डॉ. गिरीशदत्त शर्मा १६

चित्रकथा

- मित्र के साथ - देवांशु वत्स २१
- अनोखा उपहार - देवांशु वत्स ३१
- साथ - संकेत गोस्वामी ३९

बाल प्रस्तुति

- हार के आगे जीत है - अरुण शुक्ला २५
- धरती की राखी - श्रंखला तिवारी ३०

स्तंभ

- संस्कृति प्रश्नमाला - ०९
- सचित्र विज्ञान वार्ता - संकेत गोस्वामी १२
- गाथा वीर शिवाजी की - २४
- विषय एक कल्पना अनेक -हरप्रसाद रोशन २६
  - राजकुमार जैन 'राजन'
  - आकांक्षा यादव
- आपकी पाती - ३०
- देश विशेष - श्रीधर बर्वे ३४
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ३८
- हमारे राज्यवृक्ष -डॉ. परशुराम शुक्ल ४१
- आओ पता करे - ४३
- छः अगुल मुस्कान - ४३
- पुस्तक परिचय - ४४
- स्वयं बने वैज्ञानिक - राजीव तांबे/सुरेश कुलकर्णी ४८

विविध

- ये भी जानिए - राजेश गुजर १६

रचनाकारों से निवेदन

सभी बाल रचनाकारों एवं साहित्यकारों से निवेदन है कि यदि आप देवपुत्र में प्रकाशन हेतु अपनी रचना अणुडाक (E-mail) से भेजना चाहते हैं तो कृपया अपनी रचना- editordevputra@gmail.com पर भेजिए।
अब से devputraindore@gmail.com का उपयोग केवल सदस्यता एवं व्यवस्था कार्यों के लिए किया जाना अपेक्षित है।

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं?

तो कृपया ध्यान दें!
देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है- खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक - **53003592502** IFSC- SBIN**0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के मेल ID devputraindore@gmail.com पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

(४ अगस्तः मित्रता दिवस)

मित्रता के गीत

कहानी : डॉ. चेतना उपाध्याय

अरावली पर्वत श्रंखला की एक कंदरा में एक खरगोश सपरिवार हँसी खुशी रहता था। एक दिन की बात है नटखट खरगोश अपनी दादी के साथ सैर पर निकला। थोड़ी दूर पर ही उसने देखा कि एक विचित्र–सा प्राणी रो रहा है चिल्ला रहा है... ''रुको नटखट आओ हम देखते हैं उन्हें हमारी सहायता की आवश्यकता है।'' फिर उन दोनों ने मिलकर बांगड़ कछुए को सीधा किया। ''अरे! आप यहाँ कैसे?''

बांगड़ कछुए ने बताया ''मैं ऊपर वाली पहाड़ी पर जा रहा था, पैर फिसलने से अचानक नीचे उल्टा गिरा। अब मैं बूढा हो गया हूँ शरीर में इतनी ताकत नहीं रही, अपने आप सीधा नहीं हो पा रहा था। कष्ट के कारण चीख निकल रही थी। आप लोगों ने मेरी सहायता की, आपका बहुत बहुत आभार।''

''अरे! नहीं नहीं, इसमें आभार कैसा? यह तो हमारा कर्तव्य है।'' दादी बोली, फिर उन्होंने बताया कि यह नटखट मेरा पोता है। ''चलो नटखट! दादाजी के चरणस्पर्श करो। ये हमारे दादाजी के घनिष्ट मित्र हैं।''

''घनिष्ट मित्र... ऐसा कैसे हो सकता है! मैंने तो इन्हें कभी देखा ही नहीं। घनिष्ट मित्र तो आपस में मेलजोल रखते हैं।'' ''हाँ बेटा! आप सही कर रहे हो... पहले हमारे बीच बहुत प्रेम था। बड़ी घनिष्टता थी। फिर हमने मनुष्यों को प्रतियोगिताएं करते देखा। तो हम भी आपस में प्रतियोगिताएं करने लगे। प्रतियोगिता में एक जीतता है और दूसरा हारता है। जिससे एक प्रसन्न और दूसरा दुखी हो जाता था। इस हार जीत के खेल ने हमारी मित्रता में कटुता भर दी। फिर धीरे–धीरे हमारी मित्रता टूटती गई। हमने एक दूसरे से बात करना, एक दूसरे की सहायता करना भी बंद कर दिया। फिर मैं अपने परिवार के साथ उस तलहटी में रहने लगा और मेरा मित्र खरगोश उस कंदरा में रहने लगा। तुम बहुत भाग्यशाली हो तुमने इतने अच्छे परिवार में जन्म लिया। तुम्हारी दादी भी बड़ी सेवाभावी हैं। इन्होंने सारा बैर भाव भुलाकर, मेरी सहायता करने को कहा। तुम दोनों ने मिलकर मेरी सहायता की, वरना तो मैं यों ही उल्टा पड़ा रहता। मेरे पूरे शरीर में दर्द हो रहा है इसलिए मैं स्वयं सीधा हो भी नहीं पाता, और यों ही पड़े पड़े कराहता रहता।''

अपने आँसू पोछते हुए उन्होंने कहा...''आओ चलो हमारे साथ तुम हमारे घर चलो। मेरा पोता भी तुम्हारे बराबर का ही है।''

''अच्छा... क्या नाम है उसका?'' नटखट खरगोश ने पूछा... कछुआ दादाजी ने बताया कि हम उसको जगमग कहते हैं। ''अरे वाह... दादी! क्या मैं, जगमग कछुए से दोस्ती कर सकता हूँ?'' ''हाँ हाँ बेटा क्यों नहीं।'' दादी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया।

फिर हम सब धीरे धीरे चलते हुए अपने दादाजी के मित्र बांगड़ कछुए के घर गए। उन्होंने बहुत स्वागत

सत्कार किया। लाल लाल ढेर सारी गाजरें दी खाने को भी और साथ में घर ले जाने को भी। जगमग कछुए के साथ नटखट खरगोश ने खूब मस्ती की। हरी हरी कोमल घास पर खूब उलट-पलट की। वह घास खाने में भी बहुत स्वादिष्ट थी।

चलते समय नटखट की दादी ने जगमग कछुए को कहा ''अब तुम दोनों पक्के मित्र बन कर रहना, और हमेशा आनंद मनाना। अब हम चलते हैं। आप लोग पूरे परिवार के साथ कल हमारे घर आना। नटखट के दादाजी भी आप लोगों को अचानक अपने अतिथि के रूप में अपने घर देखेंगे तो बहुत प्रसन्न होंगे। सारी पुरानी शत्रुता भूल जाएंगे। अंततः वे हैं तो आपके मित्र ही।'' ''हाँ...हाँ..., क्यों नहीं, हम आपके घर अवश्य आएंगे।'' फिर धीरे-धीरे एक दूसरे के घर आने जाने से कछुए और खरगोश के परिवार में पुनः मित्रता हो गई। नटखट और जगमग को एक ही शाला में प्रवेश करवा दिया गया। जिससे बहुत सारी समस्याओं का हल निकल गया। बरसात के दिनों में बहुत कीचड़ हो जाता था तो नटखट खरगोश अपने मित्र जगमग कछुए की पीठ पर सवार होकर समय पर शाला पहुँच जाता, और तेज गर्मियों के दिनों में जगमग कछुए के पैर जलते थे तो नटखट खरगोश उसे अपनी पीठ पर बैठा कर तेजी से दौड़ता हुआ शाला पहुँच जाता। इस तरह उनका जीवन बहुत सरल हो गया।

अरावली पर्वत श्रंखलाओं में नटखट खरगोश और जगमग कछुए की मित्रता के गीत गूंजने लगे।

● **अजमेर (राज.)**

(तिलक पुण्यतिथि : १ अगस्त)

मेरा कमरा व्यवस्थित है

प्रसंग : सांवलाराम नामा

सर्दियों के दिन थे। छात्रावास में रहने वाले विद्यार्थियों में से कुछ रविवार को छुट्टी के दिन बगीचे में बैठकर धूप सेंक रहे थे और कुछ खा पी रहे थे तो कुछ गप्पे मार रहे थे। उनका शोरगुल सुनकर छात्रावास अधीक्षक बाहर आए। उन छात्रों के पास फैली गंदगी को देखकर बोले- ''तुम लोगों ने यहाँ गंदगी फैला रखी है। मैं देखकर आ रहा हूँ कि तुम्हारे कमरे भी गंदे हैं तथा कमरे का सामन भी अस्त-व्यस्त हैं।

जबकि आज छुट्टी के दिन तुम्हें इस समय अपने-अपने कमरों की सफाई कर समय का सही उपयोग करना चाहिए।

एक छात्र बरामदे में बैठा कुछ पढ़ रहा था। जब वह नहीं उठा तो अधीक्षक ने कहा- ''क्या तुमने सुना नहीं?''

छात्र ने धीरे से उत्तर दिया- ''जी श्रीमान! सुन लिया।''

''फिर उठकर अपना निर्धारित काम क्यों नहीं करते? अधीक्षक झल्लाकर बोले।''

छात्र ने विनम्रता किन्तु दृढ़ता, निडरता से उत्तर दिया- ''श्रीमान! मैं बड़ों की आज्ञा पालन करता हूँ, उसका सम्मान करता हूँ तथा अपना काम स्वयं एवं समय पर करता हूँ। मेरा कमरा एकदम साफ और व्यवस्थित है।''

अधीक्षक महोदाय को विश्वास नहीं हुआ।

उन्होंने कहा- ''चलो मेरे साथ और अपना कमरा दिखाओ?''

अधीक्षक महोदय ने जाकर उस छात्र का कमरा देखा तो पाया कि कमरा तो एकदम साफ-सुथरा था तथा सारा सामान किनारे से रखा हुआ था।

वे छात्र थे श्री बालगंगाधर तिलक जो आगे चलकर स्वतंत्रता संग्राम के लोकप्रिय नायक बने। देश के असंख्य लोगों ने उनसे प्रेरणा ग्रहण की और स्वतंत्रता की बलिवेदी पर अपना तन-मन-धन न्यौछावर कर दिया।

● **भीनमाल (राज.)**

(हरियाली अमावस्या : १ अगस्त)

इमली का पेड़

मूल मराठी लेखिका : वृन्दा दीवाण
अनुवाद : सौ. पद्मा चौगांवकर

इला तेज कदमों से कक्षा की ओर बढ़ी। उसने सुना सुनीला उसे पुकार रही थी। पर वह रुकती कैसे, जोशी दीदी का कालखण्ड जो था। वो समय पर कक्षा में आती और आते ही पढ़ाना प्रारंभ कर देती। उनके बाद कक्षा में कोई छात्रा आए ये उन्हें बिलकुल पसंद न था। कक्षा में पहुँचने की हड़बड़ाहट में इला और तेज चलने लगी। पर सुनीला ने भागकर उसे पकड़ ही लिया– ''ऐ, कबसे पुकार रही हूँ तुझे इला! सुनाई नहीं देता क्या?

''सब सुन रही हूँ। पर अभी कुछ बात नहीं। विद्यालय समय के बाद बात करेंगे।''

इस पर सुनीला ने अधीर होकर कहा– ''सुन तो इला।''

''हाँ, हाँ सुन रही हूँ जल्दी बोलो।'' इला ने चलते चलते कहा– ''सब कुछ ठीक ठाक तो है?''

''नहीं ना! कल विद्यालय प्रबंधन की बैठक थी, सारी शिक्षिकाएँ और प्राचार्य भी थी वहाँ।''

''तो क्या!'' इला आतुर थी'' बोल जल्दी जोशी दीदी का कालखण्ड है ना।''

''प्रकरण गंभीर है, इला।'' सुनीला जैसे कोई भेद की बात बताने जा रही थी– ''तुम बड़ी कक्षा की प्रतिनिधि हो, तुम्हारे स्वर में सब स्वर मिलाएंगे–वे मैदान में इमली का पेड़ है ना...।''

''हाँ, तो उसका क्या?'' इलाने उकताकर कहा।

''हाँ वही। तो वह इमली का पेड़ काटा जाने वाला है।''

''इमली का पेड़ काटा जाने वाला है।'' सुनीला की बात पर इला चौंककर रुक गई– ''इमली का पेड़ कटेगा. पर क्यों।''

'' सुना है, वहाँ कुछ कमरे बनना है, पर क्या इसके लिए वह प्यारा पेड़ काटा जाये ? सोच इला! हमें कुछ सोचना होगा...कुछ करना होगा।

तभी दीदी कक्षा में प्रविष्ट हुई पाठ आरंभ हुआ 'औसत निर्धारण' पर इला का ध्यान कहीं और था पास की खिड़की से वह बार बार बाहर देख रही थी। वह इमली का पेड़ उसकी छितरी छांव और इमली के बूटे। इला के मन में एक कसमसाहट थी 'यह पेड़ आज है कल का क्या पता।'

नम होती आँखों की वजह से, उसने चेहरे हथेलियों में छुपा लिया। पर जोशी दीदी की दृष्टि से कोई बात कहाँ छुपती।

पूछा– ''क्या हुआ इला, बार–बार बाहर क्या देख रही हो?''

दीदी की बात सुनकर जैसे हृदय

का गुबार फट निकला। इला खड़ी हो गई, रुआंसी होकर बोली– ''क्षमा करें दीदी! मेरा ध्यान।'' ''पर इला हुआ क्या है? बताओ मुझे'' जोशी दीदी चिंतित थीं। किसी तरह आवेग पर काबू कर इला ने सिसकते हुए पूछा– ''दीदी! पीछे मैदान में जो इमली का पेड़ है वह... काटा जाने वाला है?''

इला की बात सुन जोशी दीदी सकते में थी और कक्षा एकदम शांत। कुछ रुक कर दीदी ने कहा– ''तुमने ठीक ही सुना है, छात्राओं की संख्या बढ़ी हैं दो पारियों में विद्यालय चलते भी स्थान कम हैं, इसलिए यह निर्णय...।''

''कुछ भी हो हम पेड़ कटने नहीं देंगे, हममें से ही एक है वो इमली का पेड़।'' इला ने प्रयत्नपूर्वक कहा।

जोशी दीदी समझाने का प्रयत्न किया।

''मैं भी उसे काट गिराने के पक्ष में नहीं हूँ बच्चों! पहले ही भवन बनाने में पेड़ की संख्या कम हो रही है। कुछ दिनों में ऐसी परिस्थिति बनेगी...नीम, इमली, वट–पीपल इन पेड़ों को दिखाने के लिए बच्चों को जंगलों में शैक्षणिक भ्रमण पर ले जाना पड़ेगा या नेट पर इनकी जानकारी और चित्र मिलेंगे।''

''इसीलिए पेड़ हम कटने नहीं देंगे। सारी कक्षाओं को ज्ञापन भेजेंगे, कक्षाओं का बहिष्कार कर, कार्यालय के सामने धरना देंगे, अपनी बात मनवाने के लिए।''

कालखण्ड समाप्त हो गया, दीदी ने चलते–चलते कहा– ''हल्ला–गुल्ला और तोड़फोड़ न करते हुए अपनी बात रखी जा सकती है। अहिंसा की राह अपनाओ।''

सुनीला इला और दूसरी कक्षा प्रतिनिधियों ने विचार– विमर्श किया। इला का संक्षिप्त ज्ञापन पढ़कर सभी कक्षा छात्राओं ने हस्ताक्षर कर सहमति जताई।

योजनाएं बनाई गईं। मैदान में छात्राओं का एकत्रित होना, कार्यालय के सामने धरना पोस्टर तैयार कर लाना 'बचाओ, मुझे बचाओ। मैं तुम्हारा तुम्हारा मित्र' इमली का पेड़ के चित्र बनाकर लिखना 'मैं भी विद्यालय का अंग हूँ।'

सारी बातें तय हुई सुबह से शांति, विरोध कक्षाओं का बहिष्कार भूख हड़ताल की भी योजना थी छात्राओं में पर्याप्त उत्साह था।

इला घर पहुँची तो माँ काम से बाहर गयी थी। थकी हारी तो थी ही, गणवेश में ही पलंग पर लेट गई तो आँख लग गयी।

सपने में उसे किसी ने पुकारा– ''इला, मैं तुम्हारा, इमली का पेड़। तुम बस मेरे लिये कितना कुछ करना चाहती हो। मैंने सब देखा, सुना।''

''...और तुम? तुम हमारे लिये कितना कुछ करते हो। सुन्दर–सुन्दर पंछी दिखाते हो, तुम्हारी घनेरी छाँव में हम भोजन करते हैं। खट्टे–मीठे बूटे खाकर हम प्रसन्न होते हैं, हमारे खेलों के साथी हो तुम। तभी तो हम सबको तुमसे प्रेम है, तुम्हें बचाने के लिए हम इतना–सा करें कौनसी बड़ी बात है?'' इला ने कहा।

इस पर पेड़ बोला– ''हर सजीव को एक दिन खत्म होना होता है पगली। फिर क्यों न यह उपकार कुछ करने दो। मेरे मिटने के बाद जो कमरे बनेंगे उनमें भी तो तुम लोगों का आना जाना होगा। हम लोग वहीं मिला करेंगे।''

''नहीं नहीं हम तुम्हें कटने नहीं देंगे।''

माँ के लौटने पर इला ने सारी बात बताई, माँ ने कहा– ''तुम लोगों ने ठीक ही सोचा है। एक तरफ प्रदूषण रोकने के लिए पेड़ लगाने की बात होती है, दूसरी ओर जगह की कमी का बहाना पेड़ काटने के लिए। इमली का पेड़ कटना नहीं चाहिए।''

...दूसरे दिन सारा विद्यालय, विद्यालय प्रांगण में था छात्राओं का एक बड़ा समूह कार्यालय के सामने पहुँचा– ''हम इमली का पेड़ कटने नहीं देंगे।'' वह हमारा मित्र है। नारों से परिसर गूंज उठा।

सारे शिक्षिकाएं और प्राचार्य बाहर निकले– ''पहले आप सब कक्षाओं में जाएं।''

''नहीं नहीं, पहले हमारी मांगें मानी जायें तभी कक्षाएं लगेंगी तब तक पढ़ाई नहीं...और कुछ भी नहीं।'' –छात्रा नेता बोली।

''– देखो मैं अकेली कोई निर्णय नहीं ले सकती, अध्यक्ष जी को फोन करती हूँ तुम्हारी बात पर विचार होगा– तब तक आप कक्षाओं में जायें।'' प्राचार्य ने रूखेपन से कहा।

''नहीं, पहले हमें आश्वासन चाहिए।'' लड़कियाँ कार्यालय के सामने धरने पर बैठ गई हाथों में पट्टिकाएँ निश्चय के साथ... शांतिपूर्ण विरोध था।

प्राचार्य अंदर गईं– फोन पर बात होती रहीं। बाहर लौटी तो छात्राओं के मुखों पर आशा–निराशा के भाव थे सांस रोककर सब निर्णय सुनने को उत्सुक थे।

...और प्राचार्य ने कहा– ''तुम सब की इच्छा को ध्यान में रखकर वरिष्ठजनों का निर्णय है, कि पेड़ नहीं कटेगा। कमरों के लिए कुछ और सोचा जाएगा। तुम्हारे प्यारे इमली के पेड़ को, तुम लोगों के कारण से अभयदान मिला है। हम सबको भी अत्यंत प्रसन्नता है...।'' इसके बाद के उनके शब्द लड़कियों के आनंद की हिलोर में खो गए।

''हुर्रे ऽ ऽ करती हुई लड़कियाँ, इमली के पेड़ की ओर भागी। कुछ पेड़ पर चढ़ गई, कुछ ने श्रृंखला बनाकर पेड़ को घेर लिया। खुलकर गाते हुए नाच रहीं थी, झूम रही थी...और यह दृश्य प्राचार्य के साथ सारी शिक्षिकाएं कौतुक से देख रही थी।... और इमली का पेड़ अपने बूटों के साथ झूम रहा था, पत्तियों से छनकर आती किरणें थिरक रही थीं।

● **गंजबासौदा (म.प्र.)**

संस्कृति प्रश्नमाला

- लंका में राक्षस राज रावण के राजवैद्य कौन थे?
- वारणावत में पाण्डवों को धोखे से मार देने के लिए दुर्योधन ने क्या बनवाया था?
- किस अंग्रेज लेखक ने सिद्ध किया है कि यूनानी लोग चन्द्रवंशी क्षत्रियों के वंशज थे?
- वर्तमान में नेपाल में देवी के कितने शक्तिपीठ हैं?
- तमिलनाडु में नायन्मार के नाम से प्रसिद्ध कितने शैव संत हुए हैं?
- 'हिन्दी स्वराज्य' के लिए शिवाजी ने सबसे पहले कौन-सा किला जीता था ?
- केरल के प्रसिद्ध गणितज्ञ माधवन ने तीन सौ साल पहले शून्य के बाद कितने दशमलव स्थानों तक पाई (π) का मान निकाला ?
- १८५७ के महासमर में शहीद होने वाले सेठ अमरचंद बाँठिया कहाँ के निवासी थे?
- पति को युद्ध से विमुख होता देख राजस्थान की किस वीरांगना ने अपना सिर काट कर निशानी के रूप में भेजा था?
- मिजोरम से चर्च के भगाये हुए रियांग जनजाति के लोग किस राज्य में शरणार्थी के रूप में रह रहे हैं?

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

स्वतंत्रता की गाथा

नाटिका : डॉ. प्रीति प्रवीण खरे

पात्र परिचय

(१) रामदीन काका
(२) हरीश
(३) विभोर
(४) सुनील
(५) चंदन

दृश्य : (विद्यालय की छुट्टी के कारण सुबह कालोनी के महात्मा गांधी पार्क में बच्चे खेल रहे हैं। रामदीन काका टहल रहे हैं। अचानक हरीश और विभोर के झगड़े का शोर सुनकर काका रामदीन बीच-बचाव के लिए आ जाते हैं।)

रामदीन : अभी अच्छे खासे तो खेल रहे थे, अचानक झगड़ने क्यों लगे? क्या बात है, मुझे बताओ।

सुनील : काका! हरीश फुटबाल खेलना चाहता था, लेकिन विभोर ने क्रिकेट खेलने की जिद पकड़ ली। इसी बात पर दोनों में तू-तू, मैं-मैं हुई और झगड़ा शुरू हो गया।

रामदीन : दोनों इधर मेरे पास आओ। तुम दोनों तो पक्के मित्र हो। इतनी छोटी बात पर झगड़ना क्या शोभा देता है।

हरीश : काका! पिछले रविवार को भी हमने विभोर की पसंद के अनुसार क्रिकेट खेला था। सो आज मैंने फुटबाल खेलने को कहा। लेकिन इसे तो फुटबाल खेलना अच्छा ही नहीं लगता है। अब हर बार इसकी मनमानी तो नहीं चलेगी न खेलने से इंकार करने पर विभोर मुझे मारने ही वाला था कि आप आ गए। वरना....

रामदीन : वरना क्या? हर समस्या का समाधान मारपीट थोड़े ही है। चलो अब आपस में गले लगो और एक दूसरे से दोस्ती का हाथ मिलाओ। (दोनों रामदीन काका की बात मानकर एक दूसरे को गले लगाते हैं।)

सुनील : चलो अब कोई और खेल खेलें। जिसमें सबकी पसंद शामिल हो, और जिसे खेलने में सभी को खूब मजा आये।

चंदन : (रामदीन काका से) काका! आप जब छोटे थे तब कौन-सा खेल खेलना पसंद करते थे?

रामदीन : बच्चो, मुझे खेलने के बजाय पुस्तकें पढ़ना अच्छा लगता था। जब भी मैं अवकाश पाता पुस्तकें लेकर बैठ जाता था।

हरीश : (सभी बच्चों से) चलो आज हम सब क्यों ना रामदीन काका से कहानी सुनें। कैसा रहेगा? (सभी बच्चे एक स्वर में) बड़ा मजा आएगा।

रामदीन : नहीं-नहीं मैं कोई कहानी सुनाने वाला नहीं। अरे! तुम सब जाओ और खेल खेलो, मुझे टहलने दो।

विभोर : काकाजी! मान जाइए ना! मैं वचन देता हूँ अब कभी झगड़ा नहीं करूँगा।

रामदीन : अच्छा ठीक है, ठीक है। बताओ कौन सी कहानी सुनना पसंद करोगे?

हरीश : काका दो दिन बाद पन्द्रह अगस्त है और उस दिन हमारे विद्यालय में कई प्रतियोगिताएँ भी होती हैं, आप हमें पन्द्रह अगस्त के बारे में बताइए, ताकि हम प्रश्नमंच और वाद-विवाद में भाग ले सकें।

रामदीन : बच्चों! सबसे पहले ऐसा करो, आप सब आराम से बैठ जाओ, फिर मैं आप सभी को पन्द्रह अगस्त अर्थात स्वतंत्रता दिवस के बारे में बताऊँगा।

सुनील : काका! स्वतंत्रता दिवस हम क्यों मनाते हैं?

रामदीन : सुनील! क्या तुम जानते हो कि कई साल पहले हमारा देश अंग्रेजों के अधीन था।

हरीश : हाँ काका! मेरी दादी माँ ने मुझे बताया था। उन्होंने यह भी बताया कि हमारे देश को स्वतंत्र कराने में कई लोगों ने अपने प्राणों की आहूति भी दी है। वास्तव में ऐसा हुआ था?

रामदीन : हाँ हरीश! तुम्हारी दादी ने एकदम सही कहा। सबसे पहले मंगल पाण्डे ने अंग्रेजों से खिलाफत की।

चंदन : काका! ये खिलाफत क्या होती है, और ऐसा उन्हें क्यों करना पड़ा?

रामदीन : बेटा! अंग्रेजी हुकूमत वाले हम भारतीयों को मजबूर करते थे। वे चाहते थे हम उनकी गलत बातों को मानें। लेकिन मंगल पाण्डे ने बिना डरे उन्हें ना कहने का दुस्साहस किया।

चंदन : काका! उसका परिणाम क्या हुआ (सभी बच्चे आपस में आश्चर्य से एक दूसरे को ताकते हुए)

रामदीन : होना क्या था। परिणामस्वरूप उन्हें मानसिक और शारीरिक यातनाएं सहना पड़ी। लेकिन उन्होंने देश के लिए हँसते–हँसते अपने प्राण न्यौछावर कर दिये।

हरीश : काका! क्या आपने स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई में हिस्सा लिया था।

रामदीन : हरीश! यह मेरा दुर्भाग्य है, मैं उस समय तुमसे भी छोटा था।

सुनील : फिर आपको ये सारी बाते कैसे पता चली?

विभोर, चंदन, हरीश : (तीनों एक स्वर में) अरे बुद्धू!काका ने सबसे पहले बताया तो था कि उन्हें पुस्तकें पढ़ने में रुचि थी। पढ़कर उन्होंने जाना।

रामदीन : बच्चों! कुछ बातें किताबों में और कुछ अपने पिता से सुनकर।

विभोर : काका! आजादी मिलने के बाद क्या हुआ?

रामदीन : चौदह अगस्त की आधी रात को हम स्वतंत्र हुए। इसलिए सन् १९४७ को पन्द्रह अगस्त के दिन स्वतंत्रता दिवस के रूप में सारा भारत देश अपनी आजादी का उत्सव मनाता है।

सुनील : काका पहले स्वतंत्रता दिवस को क्या–क्या हुआ था। किस प्रकार मनाया गया था।

रामदीन : उस दिन लाल किले की प्राचीर पर प्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने तिरंगा झंडा फहराया था। जो हर साल देश के प्रधानमंत्री द्वारा फहराया जाता है। जगह–जगह पर प्रभात फेरियाँ निकाली जाती हैं।

राष्ट्रभक्ति के जयघोष से पूरा आकाश गूँजने लगा। देश में शहीद हुए लोगों को श्रद्धांजलि दी गई। कई लोगों को पारितोषिक वितरित किये गये। मिठाइयाँ बाँटी गई।

चंदन : काका! क्या पन्द्रह अगस्त भी एक त्यौहार है।

रामदीन : हाँ बच्चों! यह एक राष्ट्रीय पर्व है। इस दिन सभी सरकारी और निजी कार्यालयों में झंडा फहराया जाता है। देशभर में वीरों–वीरांगनाओं के गीत गाए जाते हैं।

अब तो हमें अपने घरों पर भी राष्ट्रध्वज फहराने की अनुमति है। हाँ, ऐसा करते समय अपने तिरंगे का पूरा मान–सम्मान बना रहे यह हम सबकी जिम्मेदारी है।

(सभी बच्चे एक स्वर में– झंडा वंदन के बाद मिठाई खाकर हमारी छुट्टी हो जाती है।)

रामदीन : और अब आप सबकी भी छुट्टी हो गई, और मेरी भी...

(सभी अपने घर की ओर चल पड़ते हैं। पर्दा गिरता है।)

● **भोपाल (म.प्र.)**

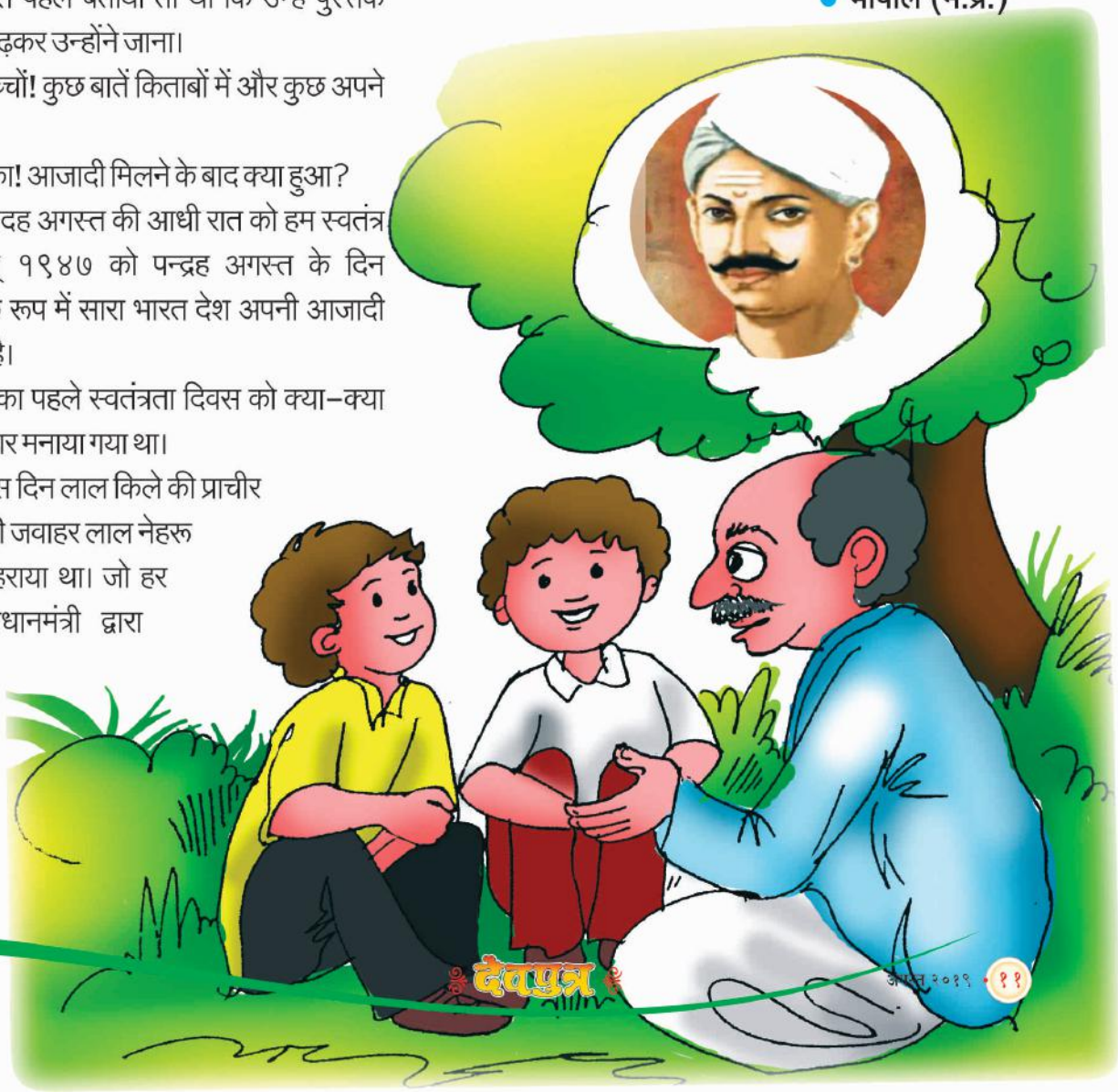

सचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

भोजन है क्या?

असल में भोजन में उन विशेष पदार्थों का समावेश है जो आहार के रूप में महत्वपूर्ण और पोषक गुणों से युक्त हैं. पौष्टिक वह है जिसमें मूल रूप से ये 6 पदार्थ हैं- कार्बोहाइड्रेड, वसा, प्रोटीन, रेशे यानी फाइबर, विटामिन और मिनरल यानी खनिज लवण हैं.

भोजन हमें ऊर्जा देता है और हमारे शरीर को गर्म बनाए रखता है. इसके बिना हमारा अस्तित्व में रहना संभव नहीं. हम इंसान इसे कभी प्रकृति और कभी प्रयास से हासिल करते हैं. आज खाने की महत्वपूर्ण चीजों का उत्पादन किया जाता है और उन्हें दूर-दूर तक सबके लिए उपलब्ध कराए जाने लायक साधन हैं.

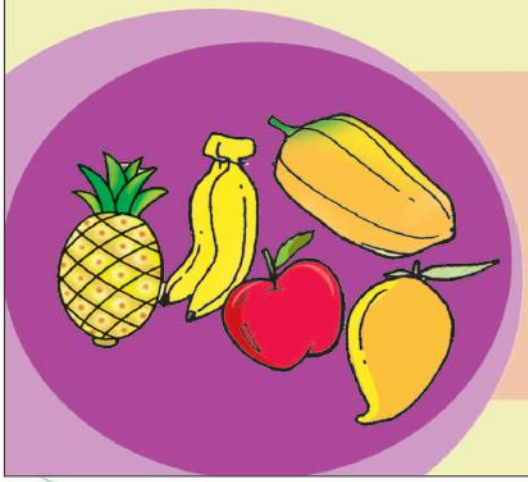

फल इंसान के भोजन के रूप में सर्वाधिक उपलब्ध भी हैं और खाए भी जाते हैं. स्वाभाविक रूप से प्रकृति द्वारा प्राप्त केला, अनानास और तरबूज से पूरी दुनिया परिचित है तो आम, सेब और पपीता ने आयात निर्यात द्वारा अपनी पहचान बना ली है.

प्रोटीन चीज, दूध, मांस, अंडा, नट्स और मछली में अधिक होता है. ये वृद्धि-विकास और शरीर की ताकत बढ़ाने के काम आते हैं.

कार्बोहाइड्रेड आलू, ब्रेड, पास्ता और चावल में अधिक होता है ये शरीर को ऊर्जा देते हैं.

विटामिन और मिनरल ताजा फल और सब्जियों में बहुत होते है ये शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं और स्वस्थ बने रहने में सहायक होते हैं.

वसा चिकनाई युक्त तेलीय चीजों, घी, मक्खन में बहुत होता है. ये ऊर्जा देते हैं और स्वस्थ नाड़ी तंत्र के लिए जरूरी हैं परन्तु इनकी अधिक मात्रा मोटापा और कष्ट बढ़ा सकती है.

फाइबर पाचन तंत्र के सही काम करने और क्षमता बढ़ाने में काम काम आते हैं. ये रेशेदार फल और सब्जियों में होते हैं.

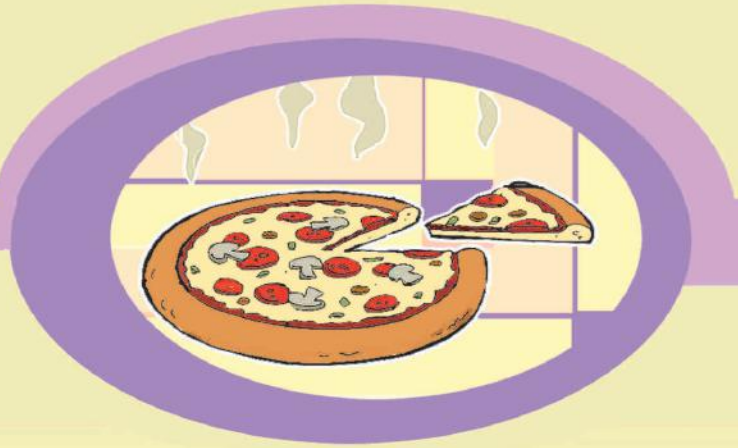

तुम्हें पता है आज दुनिया भर में खाए जाने वाले मशहूर पिज्जा को इटली के लोगों ने ईजाद किया था. करीब सन् 1700 में दक्षिणी इटली में स्थित नेपल्स के शाही अदालत के किसी रसोइये ने इसे सबसे पहले बनाया था.

समाप्त

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)

देखो जरा हमारा हाल

कविता : रुद्रप्रकाश गुप्त 'सरस'

हे! गिरधारी हे! गोपाल!
देखो जरा हमारा हाल
तुम तो खेल रचाते थे,
ग्वालों के मन भाते थे
माता हमें मना करती,
डाँट और झिड़की देती।
बात समझ लो तुम नंदलाल!
देखो जरा....।।
उमर खेलने-खाने की,
कहते पिता पढ़ाने की।
बस्ता अपना है बजनी,
टेढ़ी पीठ हुई अपनी।
अपने मन में बड़ा मलाल।
देखो जरा....।।

मेरे घर में भैंस न गाय,
मुश्किल से मिलती है चाय।
कहो कहाँ बरजोरी कर लूँ,
दूध-दही की चोरी कर लूँ।
नया जमाना गले न दाल।
देखो जरा....।।
एक बार तो फिर आओ,
गोकुल-सा संयोग बनाओ।
मेरी टाई कृष्ण छुड़ाओ,
साथ हमारे खेल रचाओ।
आना भी मत देना टाल।
देखो जरा....।।

* बरजोरी = जबरदस्ती

● हरदोई (उ.प्र.)

राखी की सार्थकता

प्रसंग : मीरा जैन

बेटे की जिद देख अतंतः लक्ष्मी को डांटना ही पड़ा– ''ये क्या बेतुकी हठ है आज तक भला किसी भाई ने बहन को राखी बांधी है, जो तू बांधेगा तूने राखी बंधवा ली है ना अब जा, देशना को परेशान मत कर, यदि तुझे भी कोई उपहार चाहिए तो बता?''

''माँ! मैं अब बच्चा नहीं रहा बड़ा हो गया हूँ। उपहार के लिए क्या मैं दीदी को राखी बांधूंगा। सत्य तो यह है माँ! दीदी ने किशोरावस्था से लेकर आज तक पढ़ाई में मेरी सहायता की, पग–पग पर उचित मार्ग बताया, श्रेष्ठ जीवनोपयोगी तथा मानवीय मूल्यों को सहेजना सिखाया उनकी सलाह सुरक्षा कवच की भांति हर समय मेरे साथ रहीं, आज मैं जिस स्थान पर हूँ और जो मेरा व्यक्तित्व है जिस पर सभी को नाज है। इसमें माँ आप लोगों के साथ दीदी का भी बहुत बड़ा योगदान है। वास्तव में आज के युग में बहन ही भाई के आंतरिक गुणों की सुरक्षा कवच होती है। मुझे लगता है कि जिनकी बहनें नहीं, उनका जीवन ही अधूरा है। दीदी के द्वारा मुझे राखी बांधा जाना मात्र एक स्नेहभरी परम्परा है और मैं यदि दीदी को राखी बांधू तो यह रक्षाबंधन के त्यौंहार की सार्थकता होगी।''

रमेश का इतना प्यार व सम्मान देख देशना की आँखें नम हो गईं। उसने बिना कुछ कहे अपनी कलाई रमेश की ओर बढ़ा दी। लक्ष्मी भी अपनी बेटी पर गर्व करते हुए कन्या जन्म के मातृत्व सुख से सराबार हो गई।

● उज्जैन (म.प्र.)

परम हितैषी

प्रसंग : डॉ. भारत भूषण ओझा

सांदीपनि आश्रम से भगवान श्री कृष्ण और उनके परम मित्र सुदामा जंगल में आश्रम के लिए लकड़ियाँ चुनने गए। मार्ग में अमरूद के पेड़ पर एक अमरूद लगा हुआ था। उसे भगवान श्रीकृष्ण ने तोड़ा और उसके चार भाग कर दिए। अपने सखा सुदामा को दो भाग दे दिए और दो भाग अपने पास रखे।

सुदामा ने अपने दोनों भाग खा लिए और भगवान श्रीकृष्ण से और अमरूद मांगा तो भगवान श्री कृष्ण ने अपनी हिस्से में से भी एक भाग और सुदामा को दे दिया। सुदामा ने उसे भी खा लिया और बचा हुआ अमरूद का भाग भी मांग लिया।

भगवान श्रीकृष्ण ने अपने मित्र सुदामा से कहा कि तुम मेरे मित्र तो हो पर मेरे हितैषी नहीं हो। यह कहते हुए भगवान श्री कृष्ण ने बचे हुए अमरूद के भाग को अपने मुँह में रख लिया। वह अमरूद कड़वा था इसी कारण से उन्होंने तुरंत मुँह से बाहर निकाल दिया। कान्हा की आँखें मित्र का स्नेह भांपकर भीग गई थी।

● उदयपुर (म.प्र.)

श्रीकृष्ण जन्माष्टमी

आलेख : डॉ. गिरीशदत्त शर्मा

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमर्धस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।

जब जब धर्म की हानि होती है आसुरी एवं दानवीय प्रवृत्तियाँ बढ़ती हैं। दुराचार, व्यभिचार, अधर्म जैसी बुराइयाँ पनपने लगती हैं और समाज के लोग आतंकित एवं भयभीत होने लगते हैं। उस समय धर्म के उत्थान एवं समाज के उद्धार के लिए मैं जन्म लेता हूँ। श्रीमद्भगवत्गीता में भगवान श्रीकृष्ण द्वारा कही गईं ये पंक्तियाँ वर्षों से उद्धृत की जा रही हैं और भविष्य में भी की जाती रहेंगी। भाद्रपद कृष्ण पक्ष की अष्टमी को कृष्ण जन्म उत्सव को भी हम इस उद्देश्य से लगातार मनाते आ रहे हैं। उनके जन्मदिन पर व्रत रखकर झांकियाँ सजाई जाती है। अर्धरात्रि तक भजन पूजन, जागरण करते हुए उनके जन्म के समय फलाहार करते हैं, प्रसाद वितरण होता है। तत्पश्चात इतिश्री हो जाती है आगामी जन्माष्टमी तक के लिए।

वस्तुतः हमारा उद्देश्य जन्माष्टमी मात्र मनाना नहीं अपितु उसके पीछे एक संदेश, एक लक्ष्य, एक अभिव्यक्ति छिपी हुई। हमें उसको अनुशीलन करना है। उसका पालन करना है। उसके अनुसार जीवन में आचरण एवं व्यवहार करना है। कल्पना कीजिए जब घनघोर अंधकार युक्त रात्रि को जिसमें कारागार में आशा की किरण शक्ति स्वरूप कृष्ण का जन्म होता है। वासुदेव जी उनको गोकुल ले जाने के लिए तत्पर हैं। कारागार के द्वार स्वयंमेव खुल जाते हैं, मार्ग में उफनती यमुना भी कृष्ण शिशु के पालने से लटके पैरों का स्पर्श कर शान्त हो जाती हैं और वसुदेव जी निर्विघ्न अपना लक्ष्य पूरा कर वापस कारागार लौट आते हैं। यह दृश्य परिचायक है कंस राजा की उस घोर निराशात्मक स्थिति जिसमें आततायी के आतंकरूपी अंधकार में किसी प्रकार की आशा की किरण नहीं दिखाई देती।

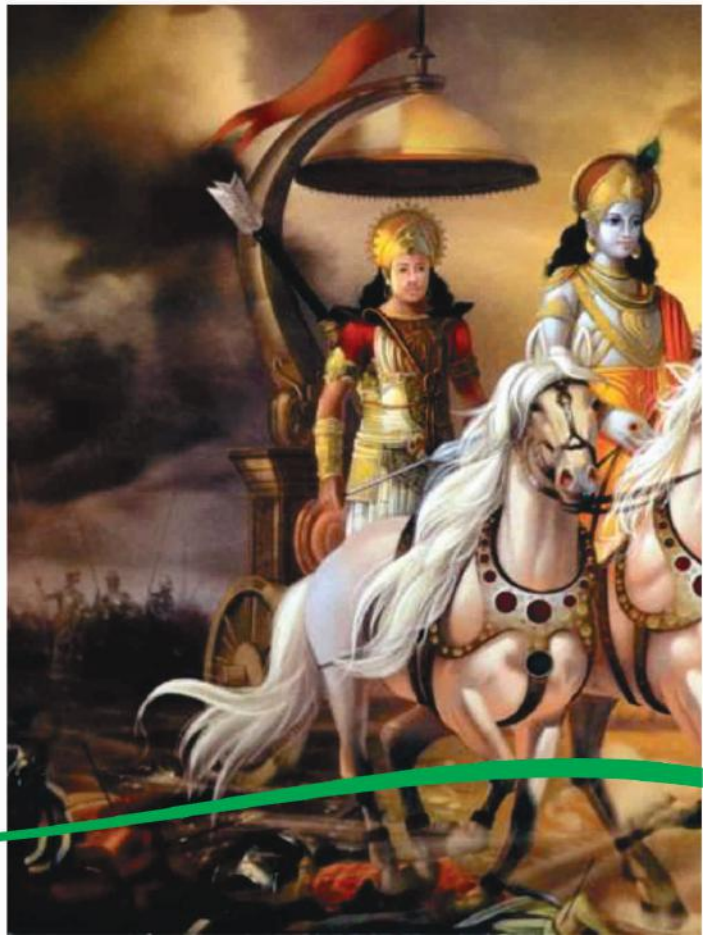

: नए संदर्भ में

दुराचार, अत्याचार, व्यभिचार आदि के भीषण भयावह अंधकार में कृष्णजन्म भी प्रतीक है आशा का संदेश है सकारात्मक सोच का। प्रेरणा है सृजनात्मक कार्य की। जब भी कोई ऐसी पवित्र आत्माओं के जन्म लेने को ही तो भगवान ने 'तदात्मानंसृजाम्यहम्' कहा है।

आज के युग में भी हमें जन्माष्टमी मनाते समय ऐसा ही आशावादी रचनात्मक लक्ष्य रखकर उसका अध्ययन करना चाहिए क्योंकि उस समय केवल एक कंस था जिसके निरंकुश शासन से प्रजा भयभीत हो त्राहि–त्राहि करने लगी थी लेकिन आज तो घर घर में छुपे रूप में अनेक कंस बैठे हैं। भौतिकवाद के इस युग में ऐसे कंसों के लिए 'स्व' के अतिरिक्त न कोई मर्यादा है, न कोई अनुशासन। शील, निष्ठा, समर्पण, त्याग, सेवा, सहयोग, सदाचार, संयम, शिष्टता जैसे गुणों का गला रेता जा रहा है। पहले कंस का शासन केवल सीमित क्षेत्र तक ही था परन्तु आज असीमित हो चला है। आज की जनता उनके ऐसे अप्रत्याशित आक्रमण से भ्रमित है, चकित है किंकर्तव्यविमूढ़ है।

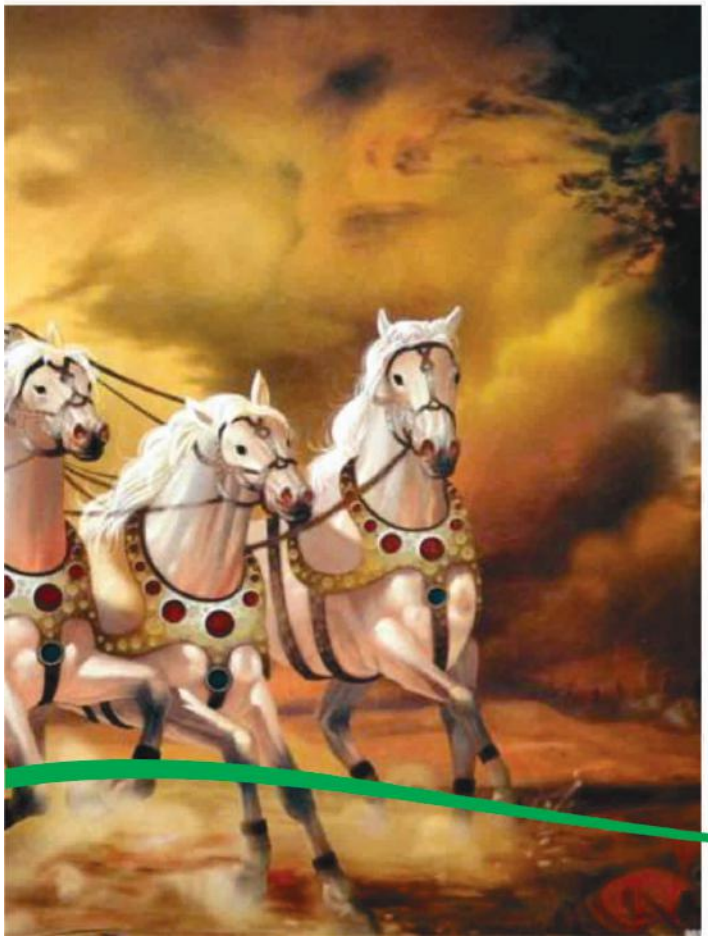

स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए जिन महापुरुषों ने यातनाएं सही, प्राणों को बलिदान किया, ललनाओं के माथे के सिंदूर पोछे माताओं की गोदें सूनी हो गईं उसकी प्राप्ति के पश्चात आज की युवा पीढ़ी उसे स्वच्छन्दता मान स्वतंत्रता रूपी वृक्ष के कच्चे पके फलों को तोड़ डालियों और शाखाओं को काटने पर तुली हुई है। ऐसी स्थिति में विनाश की ओर उन्मुख क्या स्वतंत्रता रूपी वृक्ष बच पायेगा? शोचनीय विषय है।

इसलिए आज की नई पीढ़ी इस जन्माष्टमी को मात्र व्रत उपवास रख कर ही न मनाये अपितु इसके उद्देश्यों का अध्ययन करते हुए आज का कृष्ण बनकर उभरे। कृष्ण के कृत्य जिस प्रकार निराश पूर्ण युग में उज्ज्वल शक्ति के रूप में थे उसी प्रकार आज के तरुणों को भी बिना किसी वर्ग–भेद के एक उज्ज्वल व्यक्तित्व के रूप में उभरना और देश की अस्मिता को बचाना है। जिस प्रकार युवा कृष्ण में तत्कालीन समाज से सहयोग प्राप्त कर निरंकुश शासक और उसके दुष्कृत्यों से मुक्ति दिलाई उसी प्रकार आज का युवा यदि ऐसा संकल्प ले तो समाज में स्वच्छ वातावरण की कल्पना की जा सकती है। कोई भी क्रांति आन्दोलन अभियान युवकों द्वारा ही प्रारम्भ किया जाता है क्योंकि उनमें अदम्य शक्ति एवं कार्य करने की क्षमता होती है। प्रौढ़ लोग तो उनका मार्गदर्शन ही कर सकते हैं परन्तु वास्तविक संरचनात्मक कार्य उन्हीं की संकल्प शक्ति से होते हैं।

अतः अपेक्षा है इस नई पीढ़ी से कि इस जन्माष्टमी को परम्परागत रूप से मनाकर इसी दिन से हमारे समाज के लिए अभिशाप बने कंसों को समूल उखाड़ फेंकने का संकल्प लें ताकि हम वास्तविक 'सुराज' का अनुभव कर सकें।

● सांगरिया (राज.)

माटी का मोल

कहानी : सीमा व्यास

रविवार का दिन था। पूजा घर में बैठी दादी भगवान को फूल चढ़ाते हुए भजन गुनगुना रही थीं।

पंच तत्व का बना रे शरीरा,
दुनिया कहे ये मेरा।
माटी की काया माटी होए
ना तेरा ना मेरा।।

पास बैठा दस साल का कार्तिक आतुरता से दादी की पूजा पूरी होने की प्रतीक्षा कर रहा था। उसे सुबह-सुबह दादी से दो काम होते हैं। एक तो प्रसाद का लड्डू लेना और दूसरा अपने मन की बात कहना। दादी के भजन की लय के बीच वह बोला, ''अभी कितनी देर और लगेगी दादी? पूजा जल्दी पूरी करो ना।''

''बस बेटा! ये जल पेड़-पौधों को चढ़ा दूँ और हो गई मेरी पूजा। दादी ने तरभाने (मूर्तियों को नहलाने की तांबे की थाली) का पानी छोटी बाल्टी में डालते हुए कहा। पानी चढ़ाने चले तो आगे-आगे दादी, पीछे-पीछे कार्तिक। दादी ने तुलसी क्यारे को नमन किया और एक लोटा जल तुलसी को चढ़ाकर परिक्रमा की। फिर बाल्टी का शेष पानी घर के सामने बनी बड़, पीपल और नीम की त्रिवेणी में डाला। तने को छूकर धीरे-धीरे कुछ कहने लगी। दादी को ध्यान से देख रहे कार्तिक ने झट से पूछा, ''दादी! क्या कह रही थीं आप पेड़ से? क्या पेड़ ने आपकी बात सुनी?''

दादी मुस्काते हुए बोली, ''क्यों नहीं? पेड़-पौधे हमें साँसें दे सकते हैं तो हमारे मन की बात भी सुन सकते हैं। मैं तो प्रतिदिन कहती हूँ और वे प्रतिदिन सुनते हैं।''

''सच? तो बताओ अभी क्या कहा आपने?''

''वही जो तुम दिनभर आपस में कहते रहते हो। एक दूसरे की सहायता करने पर। वो...धन्यवाद''

''धन्यवाद? क्यों दादी?''

''अभी तो बताया हमें साफ वायु, ठंडी छांह देने के लिए। इस त्रिवेणी ने जो प्राणवायु दी उसके लिए जल चढ़ाया और ठंडी छांह का आभार प्रगट करने के लिए कहा धन्यवाद। समझा? चल, यह प्रसाद ले।'' दादी ने प्रसाद का लड्डू कार्तिक के हथेली में थमा दिया।

प्रसाद लेते समय कार्तिक दादी की कलाई से अपनी कलाई सटाते हुए बोला, ''अरे दादी, देखो तो! मेरा हाथ आपके हाथ से कितना गोरा है। ऐसा क्यों?''

दादी अपनी झुर्रियों वाली सांवली कलाई और कार्तिक की गोरी कलाई को देख हंसते हुए बोली, ''माटी ज्यादा पड़ गई होगी मुझमें इसलिए।''

''किसने? और माटी कैसे ज्यादा डाली दी? मैं समझा नहीं दादी।'' कार्तिक दादी के साथ सीढियों पर बैठते हुए बोला।

''बात बड़ी है और बुद्धि छोटी। इतनी जल्दी कैसे आएगी? देख बेटा। हमारा ये जो शरीर है न, पाँच तत्वों से मिलकर बना है। धरती, पानी, आकाश, वायु और अग्नि। अब प्रकृति के जिस कलाकार ने ये शरीर बनाया, उसने मेरे शरीर में धरती यानी मिट्टी थोड़ी अधिक डाल दी। इसलिए मेरा रंग गेहुंआ है और मुझे माटी से बहुत प्यार भी है।'' दादी ने समझाया।

''तभी दादी आप मिट्टी की कितनी चीजें बनाती हो। कभी हमारे लिए खिलौने तो कभी देवालय की मूर्तियां है न!''

''हाँ, गणेश जी की मूर्तियां तो पूरे मोहल्ले के लिए बनानी होती है। अरे, अब तो ये पक्का घर है। जब कच्चा था तो सारा दिन आँगन से लेकर चौके तक लीपती रहती थी। तू जानता है, माटी में सुगंध है, ठंडक है, माटी जोड़ती है। इसलिए माटी में मन लगता है मेरा।''

दादी भावुक होती इससे पहले ही कार्तिक ने पूछा, ''तो दादी मैं तो बहुत गोरा हूँ। मेरे शरीर में कौनसा तत्व ज्यादा डाला होगा, बताओ ना?

दादी ने उसे ध्यान से देखते हुए कहा, ''आकाश तत्व। वैसा ही उजला, सुंदर है तू, और ये छुटकी है न,

तेरी बहन। इसमें तो अवश्य वायु तत्व ही ज्यादा होगा। कैसी हल्की–फुल्की है और हवा की तरह बहती रहती है सारे घर में इधर से उधर। शाला जाती है तो सब ओर सूना हो जाता है।''

''और पिताजी में?'' दाढ़ी बना रहे पिता को देख कार्तिक ने चहक कर पूछा।

दादी उसके कान के पास आकर बोली ''इसमें तो पक्का अग्नि तत्व ही अधिक होगा। देखा न गुस्सा हमेशा नाक पर चढ़ा रहता है। बात–बात में आग सा उबलता है। चाय मीठी क्यों कर दी, सब्जी खारी क्यों कर दी। पर तेरी माँ है ठंडे जल की धार। जो उसके गुस्से को पल भर में वश में कर लेती है। आग को शांत करने के लिए पानी चाहिए न!'' दादी ने कार्तिक को गले लगाते हुए कहा।

''चल, बहुत सीख ले ली आज। अब काम की बात बता। क्यों इतनी देर से मेरे आगे पीछे घूम रहा है। क्या चल रहा है मन में?''

दादी, कल विद्यालय में पर्यावरण से जुड़ा प्रोजेक्ट (प्रादर्श) बनाकर ले जाना है। वो भी जीवंत। यानी जो हिल–डुल सके। जिसमें कोई सीख हो, प्रेरणा मिले, और पता है मेरी शिक्षिका ने पूरी कक्षा के सामने कहा, कार्तिक तुम्हारा तो हर बार की तरह सबसे हटकर होगा। खूब परिश्रम और बुद्धि लगाकर बनाना।'' कार्तिक ने दादी के सामने अपनी समस्या रखी।

दादी सोचकर कुछ कहती इतने में पिताजी बोले, ''अब इसमें दादी क्या बताएगी? जरा देर नेट खोलकर बैठ जा। पर्यावरण के ढेरों प्रोजेक्ट मिल जाएंगे। पर तुमको तो सब पका–पकाया दे दो। तपाक से खा लोगे। चलो, उठो। थोड़ा परिश्रम करो। तुम्हारी शिक्षिका ने भी कहा है, परिश्रम से बनाना।''

पिताजी की डांट खाकर कार्तिक चुपचाप कम्प्यूटर में खोजने चला गया। दादी बोली, ये बात तो प्यार से भी बोल सकता था। हर बार डांटना आवश्यक है क्या? कोमल मन होता है बच्चों का। हमारे व्यवहार की छाप पड़ जाती है मन पर। छोटा है कार्तिक। स्नेह से बोला कर उसे।''

दादी की बात का कोई जवाब दिए बिना पिताजी नहाने चले गए। कुछ देर बाद कार्तिक माँ की गोद में सुबक रहा था। उसे इंटरनेट पर कोई भी मन लायक प्रोजेक्ट नहीं मिला था। माँ ने उसकी परेशानी समझते हुए पिताजी से कहा, ''सुनिए, अब एक दिन में ये कहाँ से ढूंढकर प्रोजेक्ट बनाएगा? और सब बच्चे भी नेट से ही नकल करेंगे। आप तो ऐसा कीजिए, इसे बाजार से बना बनाया ला दीजिए। गोल चौराहे के आगे एक दुकान है।

'विज्ञान ही विज्ञान' नाम से। उसके पास सब प्रकार के प्रोजेक्ट मिल जाएंगे।''

पिताजी भुनभुनाने लगे पर दादी ने जोर दिया तो शाम को ले आने का वचन दे कर दूसरे काम में लग गए। पिताजी और बेटा रात तक बाजार में घूमते रहे। पर कोई जीवंत और प्रेरणादायी प्रोजेक्ट नहीं ढूंढ पाए।

कार्तिक घर लौटा तो बहुत रुआंसा हो गया था। अब कल पूरी कक्षा के सामने उसकी नाक नीची हो जाएगी। शिक्षिका उसकी ओर देखेंगीं तो क्या जवाब देगा? रात को यही सब सोचते–सोचते सो गया।

सुबह बिना मन से उठकर तैयार होने लगा। दादी हर बार तो जादुई दीपक की भाँति मेरी सहायता कर देती थी। पर इस बार सोचते हुए वह दादी के कमरे की तरफ गया। पर कमरे में दादी नहीं थी। उसे लगा नहाने गई होंगी। वे स्नानगृह में भी नहीं थीं। माँ से पूछा। उन्हें भी बहुत देर से नहीं दिखी थी दादी। तो दादी आखिर कहाँ चली गई। कार्तिक जोर–जोर से पुकारने लगा। ''दादी! ओ मेरी दादी! कहाँ हो?

''मैं यहाँ पीछे के चौक में।'' दादी की आवाज सुनकर कार्तिक दौड़कर चौक में पहुँचा। वहाँ दादी पूरे शरीर पर गीली मिट्टी लपेटे खड़ी थीं। उन्होंने पूरे शरीर के साथ साड़ी पर भी गीली मिट्टी लपेट ली थी। कार्तिक ने पूछा, ''दादी! ये क्या है? पूरे शरीर को मिट्टी से क्यों लपेटा?''

दादी ने दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए कहा, तेरा प्रोजेक्ट। जीवंत। सूखा पेड़। देख मैं हिल सकती हूँ। बोल भी सकती हूँ। और जब तू सबको साफ हवा, पानी और ठंडी छांह, फल सब्जियां, सूखे मेवे देने वाले पेड़ों के सूखने के कारण बताएगा तो मेरे आँसू भी निकल सकते हैं। देख तो, लग रही हूँ न सूखे पेड़ जैसी?''

भोली और प्यारी दादी को पेड़ के रूप में देख कार्तिक भावुक हो गया। बोला, ''दादी! आप महान हो। आप तो गूगल से भी अधिक बुद्धि वाली हो। इससे अच्छा प्रोजेक्ट तो कोई नहीं बना सकता।'' वह दादी से लिपटने ही वाला था कि माँ आ गई। उसे रोकते हुए बोली, ''कार्तिक! गणवेश गंदा हो जाएगा। लाड़ आ रहा है तो पैर छू ले दादी के। दादी ने हर बार की तरह इस बार भी जादू कर दिया। सच में, दादी गूगल से भी तेज हैं।''

दादी को प्रोजेक्ट के रूप में विद्यालय ले जाने के लिए पिताजी ने गाड़ी निकाली। आज थोड़ा भी गुस्सा नहीं किया। वे भी प्रसन्न थे प्रोजेक्ट देखकर।

विद्यालय में भी सब दादी को कौतुहल से देख रहे थे। शिक्षिका आश्चर्य कर रही थी। सब बच्चों के प्रोजेक्ट बने बनाए लाए हुए या कॉपी–पेस्ट करके बनाए लग रहे थे। अनूठा और लाइव प्रोजेक्ट (जीवंत प्रादर्श) एक ही था, कार्तिक का। सभी शिक्षकों और विद्यार्थियों के सामने दादी सूखे पेड़ की भांति खड़ी थी। दोनों हाथों को ऊपर उठाकर सूखी टहनियां बना दीं। कातर दृष्टि से सबको देख रही थी। कार्तिक बोल रहा था, साथियों पेड़ हमें प्राणवायु देते हैं। तपती धूप में ठंडी छांह पेड़ों के तले ही मिलती है। ये हमें मीठे फल देते हैं। इनकी टहनियों में पक्षी घोंसला बनाते हैं। इनकी शाखाओं पर हम झूला डालते है। वन वर्षा का जल लाते हैं। पेड़ हमें इतना कुछ देते हैं और बदले में हम इन्हें एक लोटा पानी भी नहीं देते। हरे–भरे पेड़ हमारी लापरवाही से सूख रहे हैं। इस तरह, बोल नहीं सकते। तो क्या हम बिना बोले इनकी प्यास नहीं बुझा सकते? साथियों सब प्रण करें, धरती के हर पेड़ को हम हरा रखेंगे। उनकी प्यास बुझाएंगे।''

कार्तिक भावुक होकर बोल रहा था...सब जोर–जोर से ताली बजा रहे थे और दादी की आँखों से टप–टप आँसू बरस रहे थे।

● **इन्दौर (म.प्र.)**

शरीर में पंचतत्वों की मात्रा से रूप रंग स्वभाव का सम्बन्ध कहानीकार की बच्चे को भावात्मक रूप से पंचतत्व की अवधारणा से जोड़ने का प्रयत्न भर है। इस विषयक तथ्यों के वैज्ञानिक सिद्धांत भिन्न हो सकते हैं।

–सम्पादक

मित्र का साथ

चित्रकथा : देवांशु वत्स

राम को छोड़ कर गोलू, मोंटी और राजू सभी विद्यालय चले गए।

मोहन बाबू

रेखाचित्र : दिनेश प्रतापसिंह 'चित्रेश'

मोहन बाबू अध्यापक थे। एकदम मस्त तबियत के। औसत ऊंचाई का कद, गेहुंआ रंग और गोल–मटोल शरीर...बच्चे उनको किस्सा वाले गुरूजी कहते थे। खाली समय में कहानियाँ लिखते। कभी–कभी कविता भी रच डालते। घुमक्कड़ भी खूब थे।

मोहनबाबू अपनी लिखी कहानी कविता तो बच्चों को सुनाते ही, घुमक्कड़ी के अनुभव भी खूब साझा करते थे। एक बार दशहरा की छुट्टी में वे वाराणसी की यात्रा पर निकले। वाराणसी शिव की नगरी काशी के रूप में भी प्रसिद्ध है। यहाँ मोहन बाबू दो दिन खूब घूमे। बाबा विश्वनाथ का मंदिर, दशाश्वमेघ घाट, अस्सी घाट, संकट मोचन, मानस मंदिर और बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय जैसे स्थानों का भ्रमण करने के बाद उनका सारनाथ देखने का मन हुआ।

अगले दिन सारनाथ जाने के लिए उन्होंने टिकट खरीदा और गाड़ी पर सवार हो गए। गाड़ी पर बैठे–बैठे वे प्लेटफार्म पर निगाह दौड़ाने लगे। ठेलों पर लदे नारंगी, सेब, अंगूर आदि बिक रहे थे। कुछ बच्चे भी डलिया में फल लेकर खिड़कियों के सामने जाकर बेच रहे थे। ऐसे ही एक लड़के को उन्होंने पास बुलाया, उसकी डलिया में मोटे–मोटे केले सजे थे। कीमत थी बीस रुपया दर्जन। उन्होंने लड़के से एक दर्जन केले निकालने को कहा और स्वयं जेब से पैसा निकालने लगे।

इस बीच गार्ड ने हरी झंडी दिखाई। लड़के ने जल्दी से गिनकर अपने दुबले पतले हाथों से केले मोहनबाबू को थमा दिए। उनके पास फुटकर पैसे नहीं थे। उन्होंने पचास का नोट लड़के को थमा दिया। लड़के के पास लौटाने के लिए तीस रुपए नहीं थे। उसने चाय के ठेले वाले से फुटकर मांगे। उसके पास भी नहीं थे। इसी समय लम्बी सीटी देकर गाड़ी सरकने लगी। लड़का दौड़ कर खिलौने वाले से फुटकर लेने लगा। गाड़ी की चाल तेज हो रही थी। खिड़की से सिर लगाकर मोहन बाबू चिल्लाये ''पैसे दे बेटा!'' गाड़ी गति पकड़ती जा रही थी। खिलौने वाले से फुटकर मिलते–मिलते गाड़ी प्लेटफार्म छोड़ने जा रही थी। लड़का विवशता से गाड़ी को जाते देखता रह गया। मोहन बाबू ने सोचा– लड़का मौके का फायदा उठा ले गया, फिर उन्होंने अपनी निगाह डिब्बे के अन्दर कर ली।

गाड़ी ने गति पकड़ ली थी। स्टेशन पीछे छूट चुका था, लेकिन फलवाला दुबला–पतला लड़का मोहन बाबू के मस्तिष्क से अभी उतरा नहीं था। उनका हृदय कोमल था सोचने लगे– ''गरीबी आदमी से जो न करा दे थोड़ा है। छोटी–सी उम्र में धोखाधड़ी... कोई बात नहीं, तीस रूपए से मेरा क्या बनता–बिगड़ता है। उसकी शाम की रोटी हो जाएगी...''

थोड़ी देर में गाड़ी सारनाथ पहुँच गई। वहाँ जापान, कोरिया, थाईलैंड, चीन आदि देशों के अलग ढंग के महात्मा बुद्ध के मंदिर है, मोहन बाबू ने घूम–घूमकर इन मंदिरों का दर्शन किया। संग्रहालय में जाकर अशोक चक्र और विश्वप्रसिद्ध सिंहों वाली लाट देखी। स्तूप देखे। उस स्थान पर भी गए जहाँ कौण्डिन्य, अश्वजित, वाष्प, महानाम और भद्रिक को सबसे पहले उपदेश देते बुद्ध भगवानकी विराट प्रतिमा है, रात में बिरला जी की धर्मशाला में विश्राम किया।

दूसरा दिन उन्होंने घर के लिए वापसी किया। वाराणसी हो कर ही आना था। एकदम दस बजे उनकी गाड़ी वाराणसी पहुंची। तभी प्लेटफार्म पर टहलता, एक पुराना परिचित दिख गया। वे डिब्बे से बाहर आए। फिर दोनों आपस में बातचीत करने लगे।

तभी मोहन बाबू ने देखा, सामने से फलवाला लड़का सिर झुकाए चला आ रहा था। उन्होंने उधर से दृष्टि हटा ली, ताकि सामने पड़कर लड़के को झेंपना न पड़े। मगर थोड़ी देर में फल की टोकरी उठाए वह पास आ खड़ा हुआ। बोला– ''बाबू जी, सुनिए।''

वे कुछ कहते, इसके पहले ही उनके परिचित झिड़कने के अंदाज में बोल उठे– ''चलो हटो, हमें कुछ नहीं लेना।''

लड़के ने जेब से तीस रुपए के तुड़े–मुड़े नोट निकाले और मोहन बाबू की तरफ बढ़ाते हुए बोला– ''यह रहे आपके बकाया पैसे। परसों मैं नहीं दे सका था।''

मोहन बाबू मुग्धभाव से उस बालक को देखने लगे– गरीबी में ऐसी अद्भुत की ईमानदारी। उन्होंने उमंग में कहा– ''बेटा, इसे तुम्हीं रख लो। मैं खुशी–खुशी दे रहा हूँ।''

''बाबू जी, मैं गरीब अवश्य हूँ, लेकिन भिखारी नहीं हूँ– ''कहते हुए उसने रुपए मोहन बाबू के हाथ पर रख दिये। मोहन बाबू को उसका उत्तर बहुत पसंद आया। उन्होंने पीठ ठोक कर उसे शाबाशी दी। उन्हें लग रहा था, इस बार की यात्रा ज्यादा सफल रही। बच्चों को सुनाने के लिए यात्रा वृतांत के साथ एक ईमानदार बालक की कहानी भी जो मिल गई थी।

● **गोसाईगंज (उ.प्र.)**

कोरा कागज

छत्रपति शिवाजी महाराज के सचिव बालाजी आओ जी चित्रे सतत व्यस्त और जागरूक। महाराज की हर किसी योजना और कार्य में सहयोगी और उनकी व्यक्तिगत चिन्ता रखने वाले नित्य साथी।

महाराज ने बालाजी को एक पत्र लिखने के लिए कहा और सारे विवरण बता कर अगली योजनाओं में लग गए। पत्र दक्षिणी कोंकण के सूबेदार के पास भेजना था। महाराज ने पत्र लिखकर तैयार रखने और रात में दिखाने को कहा था, अतएव खाली समय के लिए यह काम टल गया।

लेकिन खाली समय वह भी बाला जी के पास कहाँ? उस दिन विशेषतः काम ज्यादा था। मिलने आने वालों का तांता लगा था। आयी चिट्ठियों का ढेर था। महाराज ने हर पत्र का उत्तर बोलकर लिखाया। दिन भागदौड़ में गुजर गया।

रात हुई। बालाजी महाराज की सेवा में उपस्थित हुए एक मशालची मशाल लेकर खड़ा था। महाराज गद्दे पर बैठे थे। अकस्मात् उन्हें पत्र की बात याद आ गई। उन्होंने पूछा– ''बालाजी, तुमने पत्र लिख लिया है?''

बालाजी असमंजस में पड़ गये। महाराज ने दुबारा पूछ लिया– ''बालाजी, क्या तुमने पत्र लिख लिया है?'' बालाजी को कुछ नहीं सूझा तो मुँह से हाँ निकल गया। सोचा था कि पत्रवाहक तो सबेरे प्रस्थान करेगा, तब तक पत्र तैयार कर लूंगा।

लेकिन छत्रपति किसी काम को इस तरह टालने वाले न थे। आदेश दिया– ''पढ़ो उसे।'' बालाजी कठिनाई में पड़ गये। अब वह पढ़ें तो क्या पढ़ें। उन्होंने एक कोरा कागज उठा लिया और उसे सामने करके पढ़ने लगे। मशालची पढ़ने में प्रकाश की सुविधा देने के लिए पास आया। बालाजी ने पत्र शुरु से आखिर तक पढ़ दिया। मशालची पत्र को आँखें फाड़–फाड़कर देखता रहा। आखिर, पत्र पूरा होते –होते वह अपनी हँसी दबा न सका। बालाजी सशंकित। महाराज ने मशालची से हंसी का कारण पूछा। मशालची घबड़ा गया, बोला– ''कुछ नहीं, महाराज।''

छत्रपति ने हाथ आगे बढ़ाकर पत्र देखने के लिए मांग लिया। बालाजी को लगा कि अब उनके जीवन का अन्त निकट है। उन्होंने कागज महाराज को सौंपते हुए हाथ जोड़ दिए–''महाराज, मुझे क्षमा करें। दिन भर की व्यस्तता में मुझे पत्र लिखने का समय नहीं मिला। मैं अभी रात में पत्र लिखता।''

''लेकिन तुमने कोरा कागज पढ़ने में बड़ी चालाकी दिखाई।'' महाराज खुल कर हंस पड़े। मशालची ने भी साथ दिया। महाराज ने बालाजी को ढाढस बंधाया– ''शाबास बालाजी! मुझे तुम्हारे जैसा प्रगल्भ सचिव पाकर गौरव अनुभव हो रहा है। मैं वस्तुतः सौभाग्यशाली हूँ।''

बालाजी की आँखें कृतज्ञता से आर्द्र हो गईं।

भवालकर स्मृति कहानी प्रतियोगिता में पुरस्कृत

हार के आगे जीत है

बाल प्रस्तुति : अरुण शुक्ला

बहुत पुरानी बात है। एक निर्धन किसान था, उसके पास बहुत कम भूमि थी। उस किसान के साथ उसका परिवार भी रहता था। अपने परिवार का पालन पोषण करता था। एक बार दो वर्ष वर्षा नहीं हुई थी, इसी बीच किसान की पत्नी कल्पना बीमार पड़ गई। किसान के पास उपचार के लिए पैसे नहीं थे। उसने खेत बेच कर कल्पना का उपचार करवाया, पर कल्पना का उपचार सफल नहीं हुआ और उसकी मृत्यु हो गई। यह बात उसके लड़के रघु को पता चली तो वह बहुत रोया। दो–तीन महीने बाद किसान भी अस्वस्थ हो गया उसे बहुत तेज बुखार चढ़ा था। किन्तु उसकी दवाई के लिए पैसे नहीं थे। उनके पास एक घर था। उसे बेच दिया जो, पैसे मिले उससे पिता जी का उपचार करवाया। किन्तु पैसे की कमी के कारण उसके पिताजी भी स्वर्ग सिधार गए। अब वह अकेला हो गया। वह गाँव छोड़कर शहर चला गया, वहाँ उसे कोई नौकरी नहीं मिली वह सड़क पार कर रहा था तभी एक कार वाला उसे टक्कर मार कर चला गया, उसे बहुत पीड़ा हो रही थी। उसने सोचा कि अब मेरा एक पैर कट गया अब मुझे नौकरी नहीं मिलेगी अब तो भीख मांगना ही बचा है। उसने भीख माँगना शुरु कर दिया। जो भी उसके सामने से निकला उसी के सामने हाथ फैला देता था। उसे भीख मांगना अच्छा नहीं लगता था, लेकिन वह अपना पेट भरने के लिए भीख मांगता था। धरती उसका बिछौना था। आसमान उसकी ओढ़न थी तभी उसे एक स्थान पर लिखा दिखा हार के बाद जीत है। उस वाक्य ने उसके अंदर जिजीविषा बढ़ा दी। फिर उसने एक गाड़ी वाले से कहा ''कृपया मुझे कुछ पैसे दे दीजिए मुझे अपना उपचार कराना है।'' वह परोपकारी व्यक्ति था। उसने लड़के को कहा– ''बेटा! तू मेरे पास आ मेरे साथ चल आज से तू मेरे साथ मेरे घर में रहेगा'' फिर वह लड़का उसके साथ चला गया। उस व्यक्ति ने उसका उपचार करवाया। उसके कृत्रिम पैर लगवाए। उस व्यक्ति के बेटे से भी इस बालक की मित्रता हो गई थी। वह व्यक्ति इस बालक को अपने बेटे जैसा पालने लगा। वह लड़का सुविधापूर्ण जीवन जीने लगा। अगर वह लड़का हार मानकर मर जाता तो उसे यह सुख न मिल पाता। उसने हार नहीं मानी तथा ऐसा जीवन पा गया अतः वह समझ गया कि हार के आगे जीत है।

● उतैली (म.प्र.)

विषय एक
कल्पना अनेक

राखी

बोली बहना

● हरप्रसाद रोशन

राखी का क्या मोल बहन,
राखी है अनमोल बहन।
भाई को जब राखी बांधे,
बहन स्नेह आशीष ही मांगे।
इस प्रेम का उपहारों से,
नहीं है कोई तोल बहन।
राखी है अनमोल बहन।।
राखी कच्चे धागों वाली,
लेकिन पक्के वादों वाली।
भाई बहन के रिश्ते का,
है यह मीठा बोल बहन।
राखी है अनमोल बहन।।

- हल्द्वानी
(उत्तराखण्ड)

● राजकुमार जैन 'राजन'

राखी के दिन भैया से
बोली जाकर प्रिय बहना
भैया, हरदम तुम मेरी
आँखों के आगे रहना।
बांध रही हूँ मैं कलाई पर
रक्षा का ये बंधन।
इस बंधन की लज्जा रखना
मांगूं यही वचन।
अक्षत, कुमकुम, रोली, टीका
श्रीफल मैं हूँ लाई।
मेरे हाथों से मुँह मीठा
कर लो मेरे भाई।
रेशम के धागों के बदले
चाहूँ ये उपहार।
साथ-साथ हर साल मनाएं
राखी का त्यौहार।

● आकोला (राज.)

राखी का त्यौहार

● आकांक्षा यादव

प्यारी-प्यारी मेरी बहना
हरदम माने मेरा कहना।
राखी का त्यौहार आए
मन को भाये, खूब हर्षाए।
बांधे प्यार से राखी बहना
प्यार का अद्भुत सुंदर गहना
भैया मेरे रक्षा करना
दुःख आये तो मिलजुल सहना।

राखी बांध मिठाई खिलाए
तिलक लगा खूब दुलराए
ऐसा सुंदर है यह रिश्ता
जोड़ी-देखकर माँ मुस्काए।
पढ़-लिखकर मैं बड़ा बनूंगा
बहना को दूंगा उपहार।
मेरी बहना जग से न्यारी
पावन भाई-बहन का प्यार।

– पोर्टब्लेयर (अंदमान)

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'राखी' विषय पर ही अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

आपकी कविता

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....
.....

अमर शहीद रामू

प्रसंग : भानुप्रताप सिंह

रामू अपनी माँ का इकलौता बेटा था। रामू के पिताजी रेल दुर्घटना में शांत हो गए थे। रामू की माँ सुशीला परिश्रम मजदूरी करके अपना और बेटे का पालन–पोषण करती थी।

सुशीला सुबह जल्दी जागती। घर का सारा सारा काम करती। खाना बनाती, टिफिन लगाती। नहलाकर रामू को विद्यालय भेजती। फिर शेष समय में मजदूरी करती।

कक्षा दस पास होने के बाद रामू ने पढ़ाई छोड़ दी। बुरे मित्रों की संगति में पड़कर आवारा घूमने लगा। माँ के डाँटने का इस पर कोई प्रभाव न पड़ता था। सुशीला कड़ा रुख अपना कर इकलौते बेटे का मन दुखाना नहीं चाहती थी। एक दिन, दिन–रात रामू घर नहीं लौटा। माँ चिन्ता में पड़ गई। सारी रात बगैर कुछ खाए–पिए बैठे सोचती रहीं। सुबह खून से लथपथ रामू घर आ गया। सुशीला ने घाव धोकर लेप लगाया। स्नेह से सर पर हाथ फेरने लगी।

रामू के मामा की बिटिया कमला हर साल रक्षाबंधन पर राखी बांधने अवश्य आती थी। दूसरे दिन रक्षाबंधन का त्यौहार था। कमला राखी बांधने आई थी। उसने रामू की यह दशा न देखी गई। दूसरे दिन राखी बांधने के बाद कमला ने रामू से कहा– ''भैया! मैं आज के बाद दोबारा तभी राखी बांधूगी जब कुछ बनकर दिखाओगे। नहीं तो आज के बाद राखी बांधने नहीं आऊंगी।'' कहते–कहते कमला रोने लगी। शाम को गाड़ी से लौटकर गाँव चली गई।

कमला की बातों ने रामू को झकझोर दिया। संयोग से एक महीना बाद जिले में सेना की रैली भर्ती थी। रामू ने भी भर्ती दौड़ में भाग लिया और प्रथम आया। चार दिन बाद सेना में भर्ती होकर प्रशिक्षण केन्द्र फतेगढ़ भेज दिया गया। आठ महिने प्रशिक्षण पूरा होने के बाद इन्हें जम्मू के बारामूला चौकी (बंकर) पर तैनात कर दिया गया।

८ अगस्त, १९९८ को दोपहर १२ बजे जब यह खाना खा रहे थे। कुछ आतंकियों ने बंकर घेर लिया और गोलियाँ चलाने लगे। यह भी अपने दो साथियों के साथ मोर्चा लेकर उनका मुँहतोड़ उत्तर देते रहे। इनके अचूक निशाने से दो आतंकी ढेर हो गए। तब तक पीछे से आकर गोली इनके पीठ के बाँई ओर लगी। यह वन्दे मातरम् कहते देश के लिए लड़ते–लड़ते शहीद हो गए।

जिस दिन अमर शहीद रामू का पार्थिव शरीर इनके पैत्रिक गाँव लालपुर आया। उस दिन रक्षाबंधन का त्यौहार था। कमला ने कलाई में राखी बांधकर गर्व का अनुभव किया।

आज भी हर वर्ष रक्षाबंधन पर कमला बलिदान स्थल पर राखी बांधने अवश्य आती है।

● सिघांव (उ.प्र.)

ये भी जानिए

प्रस्तुति • राजेश गुजर

पिंगली वेंकैया-(2 अगस्त 1876 - 4 जुलाई 1963)

भारत के तिरंगे ध्वज को पिंगली वेंकैया ने डिजाइन किया था। इन्होंने ही महात्मा गाँधी के सामने यह प्रस्ताव रखा था कि भारत का अपना एक ध्वज होना चाहिए, जो देश की पहचान बन सके। इसके मौलिक डिजाइन में केवल दो ही रंग केसरी और हरा था।

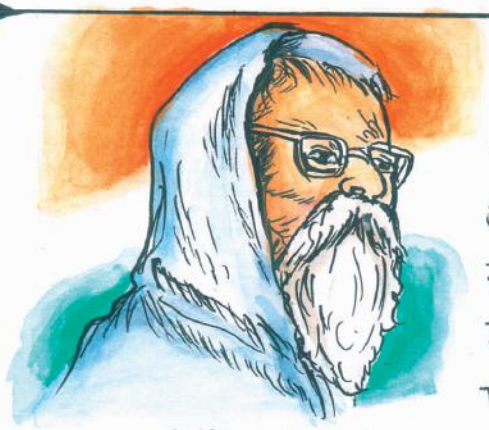

विनोबा भावे -

गाँधीवादी आचार्य विनोबा भावे ने अपने स्कूल-कॉलेज के सभी सर्टिफिकेट जला दिए थे। वे मुंबई जा रहे थे तभी उन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय पर गाँधीजी का लिखा लेख पढ़ा, उन्होंने तुरंत फैसला लिया कि वे बनारस जाकर संस्कृत पढ़ेंगे।

भगतसिंह -

भगत सिंह ही ऐसे अमर शहीद हैं, जिन पर सबसे ज्यादा सात फिल्में बनी हैं-
1. शहीद-ए-आजाद-1954, 2. शहीद भगतसिंह-1963, 3. शहीद-1965, 4. शहीद-ए-आजम-2002, 5. 23 मार्च 1931: शहीद-2002, 6. द लीजैण्ड ऑफ भगतसिंह-2002, एवं 7. रंग दे बसंती-2006.

धरती की राखी

बाल प्रस्तुति : श्रंखला तिवारी

धरती बोली सूरज भैया,
मेरी प्यास बुझाओ।
सूखे खेत, कटे हैं जंगल,
कुछ उपाय कर जाओ।।

सूरज ने सागर के जल से,
बादल एक बनाया।
बरसा कर धरती पर उसने,
सूखा दूर भगाया।।

धरती ने तब इन्द्रधनुष से,
राखी एक बनाई।
पहना कर सूरज को उसने,
स्नेह की रीत निभाई।।

● नई दिल्ली

आपकी पाती

● भानुप्रताप सिंह, चकपैगम्बर पुर (उ.प्र.)

देवपुत्र बाल मासिक के निरन्तर, सफल प्रकाशन व संपादन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका का अंक मिला। कहानी, कविता, लेख, प्रसंग, चित्रकथा आदि अतिउपयोगी हैं। संपादकीय राष्ट्र की ओर ध्यान आकृष्ट करती है।

अनोखा उपहार

चित्रकथा : देवांशु वत्स

अनमोल उपहार

कहानी : डॉ. सेवा नन्दवाल

विगत दिनों से आतुरता से रक्षाबंधन की प्रतीक्षा कर रही थी मनीषा और जब वह दिन आ गया तो अचानक उसका मन बदल गया। उसने आक्रोशपूर्वक भाई से पूछ लिया– ''भैया मैं तुम्हे कब से राखी बाँध रही हूँ?'' जब से एक साल की नन्ही गुड़िया थी तब से। मगर क्यों पूछ रही हो?'' विजय ने आश्चर्य जताते हुए पूछ लिया। ''इसलिए कि इस बार मुझे तुमसे विशेष उपहार चाहिए। हर बार की तरह पच्चीस पचास रू नहीं।''–मनीषा ने तुनकते हुए कहा।

''तुम्हें पता है अभी मैं पढ़ाई कर रहा हूँ और माँ–पिताजी पर आश्रित हूँ। पढ़ाई पूरी कर अच्छी नौकरी पर लग जाऊँ फिर देखना तुम्हें उपहारों से लाद दूँगा'' – विजय ने मुस्कराते हुए कहा। '' वह तो जब दोगे तब देख लेंगे पर मैं अभी की बात कर रही हूँ। कोई बहाना नहीं चलेगा। अपनी पाकेटमनी सब खर्च कर देते हो और मुझे देने के लिए माँ–पिताजी से माँगते हो''– मनीषा की शिकायत समाप्त नहीं हुई।

''तुम्हें कहा तो... ''नहीं मैं कुछ नहीं जानती, मुझे इस बार तुमसे मोबाइल फोन चाहिए''– मनीषा ने इच्छा बताई। ''लेकिन वह तो काफी महँगा आएगा। इस वक्त मेरे पास उतने पैसे नहीं हैं''– विजय ने समझाना चाहा। ''तो मेरे पास भी तुम्हें बांधने के लिए राखी नहीं हैं'' कंजूस कहीं के''– आक्रोशपूर्वक मनीषा बोली। ''ठीक है तो मत बांधो'' – कहकर मुँह बनाते हुए विजय अपने कमरे में चला गया।

मनीषा अपने कमरे में गुमसुम बैठी स्वयं पर झल्ला रही थी कि उसकी प्रिय सहेली संगीता आ पहुँची। मनीषा के मुखड़े को पढ़ते हुए बोली– ''लो मैं तो यह देखने आई थी कि भाई से तुम्हे क्या उपहार मिला है पर तुम्हारे मुखड़े पर तो बारह बज रहे हैं।'' मनीषा कसमसाकर रह गई कुछ नहीं बोली। संगीता ने फिर पूछा– ''क्या बात है आज राजकुमारी का मुँह क्यों लटका हुआ है? अरे भाई, मुँह तो हमारा लटकना चाहिए जिसका इस दुनिया में दूर दूर तक कोई भाई नहीं है।''

मनीषा फिर कुछ नहीं बोली तो संगीता ने कुरेदा– ''अपनी सबसे अच्छी सहेली को भी नहीं बताओगी?'' अब मनीषा को चुप्पी तोड़ना पड़ी, उसने सब कुछ बताते हुए पूछ लिया– ''तू ही बता इस बार मैंने बड़ा उपहार मांग लिया तो क्या अपराध कर दिया?''

संगीता अनायास खिलखिलाकर

हंस पड़ी। मनीषा उनका मुँह टुकुर टुकुर देखने लगी। ''मुझे रोना आ रहा है और तुम्हारी हँसी रुक नहीं रही'' – मनीषा ने शिकायत की। ''तुम्हारी नासमझी पर हँसी आ रही है। तुम एक अनमोल उपहार से दूसरे अनमोल उपहार की माँग कर रही हो'' – संगीता ने मुस्कराते हुए कहा। ''क्या मतलब मैं समझी नहीं'' – मनीषा उसका मुँह देखते बोली।

''अरे साधारण सी बात है...एक भाई अपने आप में अनुपम अनमोल उपहार है। तुम्हारा एक भाई है तो तुम्हें दूसरा उपहार चाहिए और एक मैं हूँ अभागी हूँ जिसे भगवान ने एक भाई तक नहीं दिया। शिकायत मुझे करना चाहिए कि तुम्हें?'' – संगीता ने पूछा।

मनीषा को अचानक अपनी भूल अनुभव हुई और वह दौड़ते हुए विजय के कमरे की ओर रवाना हुई। कमरा अंदर से बंद था। उसने द्वार खटखटाया तो बड़ी कठिनाई से विजय ने दरवाजा खोला।

सामने का दृश्य देखकर मनीषा अभिभूत रह गई। विजय बोला– ''देख ले। गुल्लक तोड़कर पैसे गिन रहा हूँ ताकि तुम्हें मोबाइल दिला सकूं। ''नहीं भैया। मुझे मोबाइल नहीं चाहिए बस सिर्फ राखी बांधना है... सारा हिसाब किताब तुम्हारी नौकरी लगने पर चुकता कर देना'' – कहते हुए मनीषा सुबक पड़ी। मनीषा को रोते देख विजय का मन भी भीगने लगा। वह सोच में पड़ गया कि मनीषा के इस हृदय परितर्वन का कारण क्या हो सकता है?

● **इन्दौर (म.प्र.)**

उलझ गए!

● देवांशु वत्स

मोहन राधेश्याम का पुत्र है, पूजा मोहन की पुत्री है, मोहिनी पूजा की बुआ है और राजू मोहनी का पुत्र है। क्या तुम बता सकते हो कि राजू मोहन का रिश्ते में क्या लगेगा?

(उत्तर इसी अंक में)

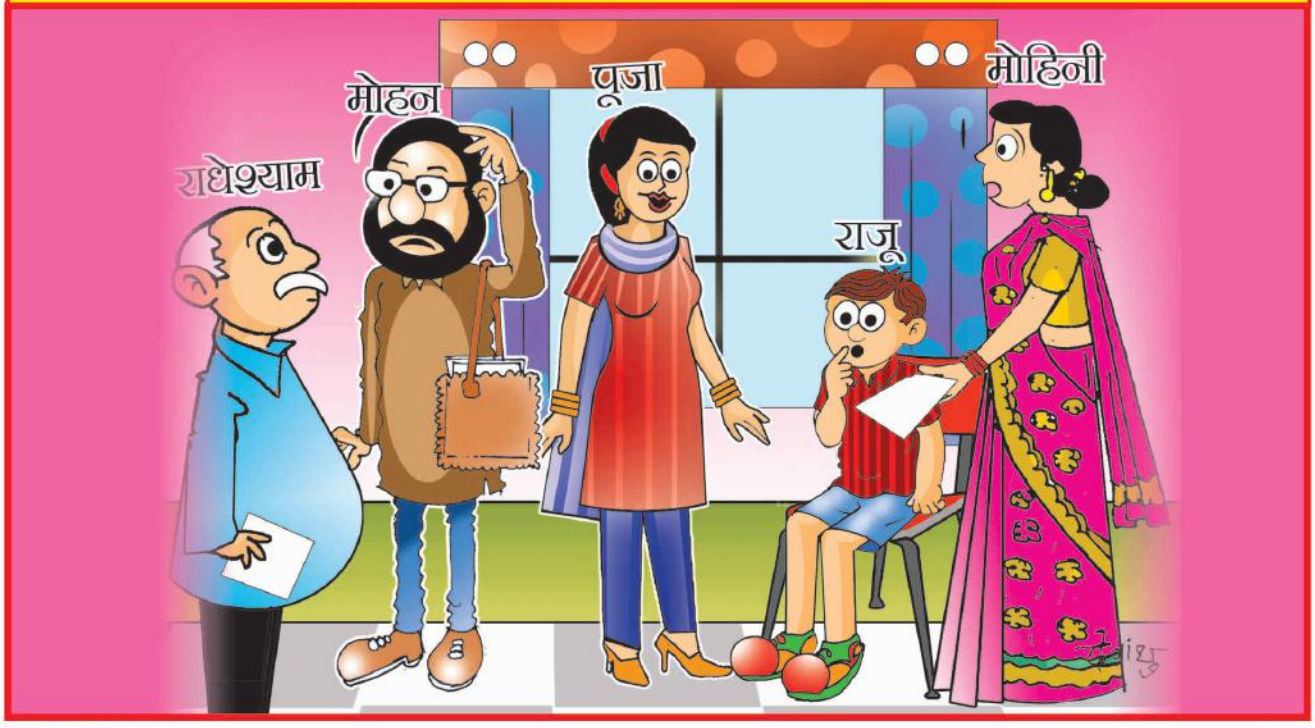

मिलते जुलते नामों के देश (२)

आलेख : श्रीधर बर्वे

(गतांक से आगे)

दीक्षा– दादाजी और फिर कांगो नाम के ये दो देश?

दादाजी – हाँ, बच्चो! कांगो नाम के भी दो देश हैं। एक **डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कांगो** देश है जो अफ्रीका के मध्य में स्थित है। क्षेत्रफल में यह अफ्रीका का सबसे बड़ा तथा दुनिया का दसवाँ बड़ा देश है। यह देश १९६० तक बेल्जियम का उपनिवेश था। इसने कुछ समय के लिए अपना नाम जायरे कर लिया था, परन्तु बाद में पुनः कांगो नाम अपना लिया। किन्शासा इस देश की राजधानी है।

अनंता– दादाजी, दूसरे कांगो देश के बारे में बतलाइए।

दादाजी– दूसरा कांगों देश पहले फ्रांस के अधीन था जो अब **रिपब्लिक ऑफ कांगो** नाम से ख्यात है। ब्राजाविंल नगर में इसकी राजधानी है।

दीक्षा– दादाजी! इन दोनों देशों के नामकरण का क्या आधार है?

दादाजी– कांगों अफ्रीका की ही नहीं विश्व की बड़ी नदियों में है। यह ४७०० किलोमीटर लम्बी नदी अटलांटिक महासागर में विलीन होती है। इस नदी के नाम के आधार पर इनका नामकरण हुआ।

अनंता– दादाजी! अफ्रीका में विश्व की एक और बड़ी लम्बी नदी नाइजर भी तो है।

दादाजी– हाँ, नाइजर भी बहुत बड़ी नदी है। ४१८० किलोमीटर लम्बी नदी अटलांटिक महासागर में मिलती है। इस नदी के कारण भी दो देशों के नाम मिले हैं एक देश है नाइजर जो पहले फ्रांस के अधीन था। नाइजर देश ३ अगस्त, १९६० में मुक्त हुआ। इस देश की राजधानी नियामी है। नाइजर नदी के कारण नाइजीरिया देश को भी नाम प्राप्त हुआ है। नाइजीरिया पहले ब्रिटेन के शासन में था जो १ अक्टूबर, १९६० में आजाद हुआ। **नाइजीरिया** अफ्रीका महाद्वीप का सबसे अधिक जन संख्या का देश है। इस देश की आबादी १६ करोड़ है तथा राजधानी अजूबा है।

दीक्षा– दादाजी! क्या अफ्रीका में एक ही नाम के और देश भी है?

दादाजी– हाँ, अफ्रीका में सूडान नाम का देश है। ९ जुलाई, २०११ को इस देश का दक्षिणी भाग एक अलग देश के रूप में उदित हुआ। उसका नाम दक्षिण सूडान है। सूडान की राजधानी खारतूम तथा दक्षिण सूडान की राजधानी जूबा शहर में है।

दीक्षा – क्या अफ्रीका के देशों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद अपने नाम अपनी सीमाएं नहीं बदलीं?

दादाजी – संक्षेप में इन बातों की पृष्ठभूमि समझ लो– एक समय था जब इथियोपिया और लायबेरिया को छोड़कर पूरा अफ्रीका महाद्वीप ब्रिटेन, फ्रांस, पुर्तगाल, स्पेन, बेल्जियम और जर्मनी का उपनिवेश हुआ करता था। अपने साम्राज्य विस्तार की दृष्टि से इन योरोपिय देशों ने १८८५ में बर्लिन सम्मेलन में अफ्रीका महाद्वीप की राजनीतिक सीमाएं अपनी सुविधा और लाभ के आधार पर तय कर लीं। विभिन्न स्थानों, क्षेत्रों में निवास करने वाली जनजातियों, सजातियों की संस्कृति, भाषा और भौगोलिक निकटता का उन्होंने ध्यान नहीं रखा।

जब अफ्रीका महाद्वीप के अधिकांश देश स्वतंत्र हो गये तो इन देशों ने अपना एक महाद्वीपीय संगठन 'अफ्रीका एकता संगठन' १९६० में बनाया जिसमें उन्होंने यह निश्चय किया था कि उपनिवेशों की स्वतंत्रता के बाद नये देशों की सीमाएं पहले के अनुसार (पूर्ववत) बनी रहेंगी। सम्भवतः इसी कारण उन्होंने अपने पुराने नामों को अपनाए रखा है।

अनंता– तो क्या सभी देशों ने अपने पुराने नाम बनाए रखे हैं?

दादाजी – नहीं, ऐसा नहीं है कुछ देशों ने अपने नाम बदले भी हैं।

दीक्षा – किन–किन देशों ने नाम बदले हैं?

दादाजी– बहुत से देशों ने अपने नाम बदले हैं– गोल्ड कोस्ट ने घाना, अपर वोल्टा ने बुरकिना–फासो, दहोमे ने बेनिन, बसुटोलैण्ड ने लेसोथो, न्यासालैण्ड ने मलावी, उत्तरी रोडेसिया ने जाम्बिया, दक्षिणी रोडेसिया ने जिम्बाबवे, बेचुआना लैण्ड ने बोत्सवाना, दक्षिण पश्चिमी अफ्रीका ने नामिबिया, एबीसीनिया ने इथियोपिया, टांगनिका ने जंजीबार के साथ मिलकर टांजानिया जैसे परिवर्तित नाम अपनाए हैं।

अनंता– क्या एक ही नाम के और भी देश हैं?

दादाजी– हाँ बच्चो, दक्षिण प्रशांत महासागर में समोआ नाम का द्वीप समूह देश है। पहले यह पश्चिमी समोआ कहलाता था किन्तु अब केवल समोआ कहलाता है, यह राजतंत्रीय देश है। अपिया में समोआ की राजधानी है। समोआ के पड़ोस में एक और द्वीप समूह क्षेत्र 'अमेरिकन समोआ' के नाम से स्थित है। अमेरिकन समोआ संयुक्त राज्य अमेरिका का स्वायत्तशासी क्षेत्र है, जिसकी राजधानी पागो–पागो है।

दीक्षा– अच्छा हुआ इतना जानने को मिला।

दादाजी– ठीक है, लेकिन अभी और भी एक जैसे नाम के देश है।

अनंता– वो कौन से देश हैं?

दादाजी– एक है हमारे एशिया महाद्वीप में कोरिया। १९४५ तक कोरिया एक देश हुआ करता था, दूसरे महायुद्ध के बाद विश्व राजनीति के कारण कोरिया विभाजित हो गया, दो भागों में। उत्तरी कोरिया एक साम्यवादी देश है, जिसका अपना पूरा नाम है डैमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कोरिया। और हाँ, यह भी अजीब संयोग है कि हमारे देश के छत्तीसगढ़ राज्य में कोरिया नाम का एक शहर और जिला भी है। है ना मजेदार संयोग।

हमारे ही महाद्वीप में विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या का देश चीन है। जो हमारा उत्तरी पड़ोसी देश है। बीजिंग इसकी राजधानी है तथा इस विशाल देश का अधिकृत नाम है 'पिपुल्स रिपब्लिक ऑफ चायना'। और तुमने ताईवान द्वीप देश का नाम भी सुना होगा। इस द्वीप का ताईवान नाम भले ही प्रसिद्ध हो किन्तु इसका अधिकृत नाम है 'रिपब्लिक ऑफ चायना'। ताइपेई इस देश की राजधानी है। यह देश जापान के दक्षिण तथा फिलीपीन्स के उत्तर में स्थित है।

दोनों बच्चे एक साथ– दादाजी क्या और भी ऐसे देश हैं जिनके नाम सदृश्य हैं?

● **इन्दौर (म.प्र.)**

(शेष अगले अंक में)

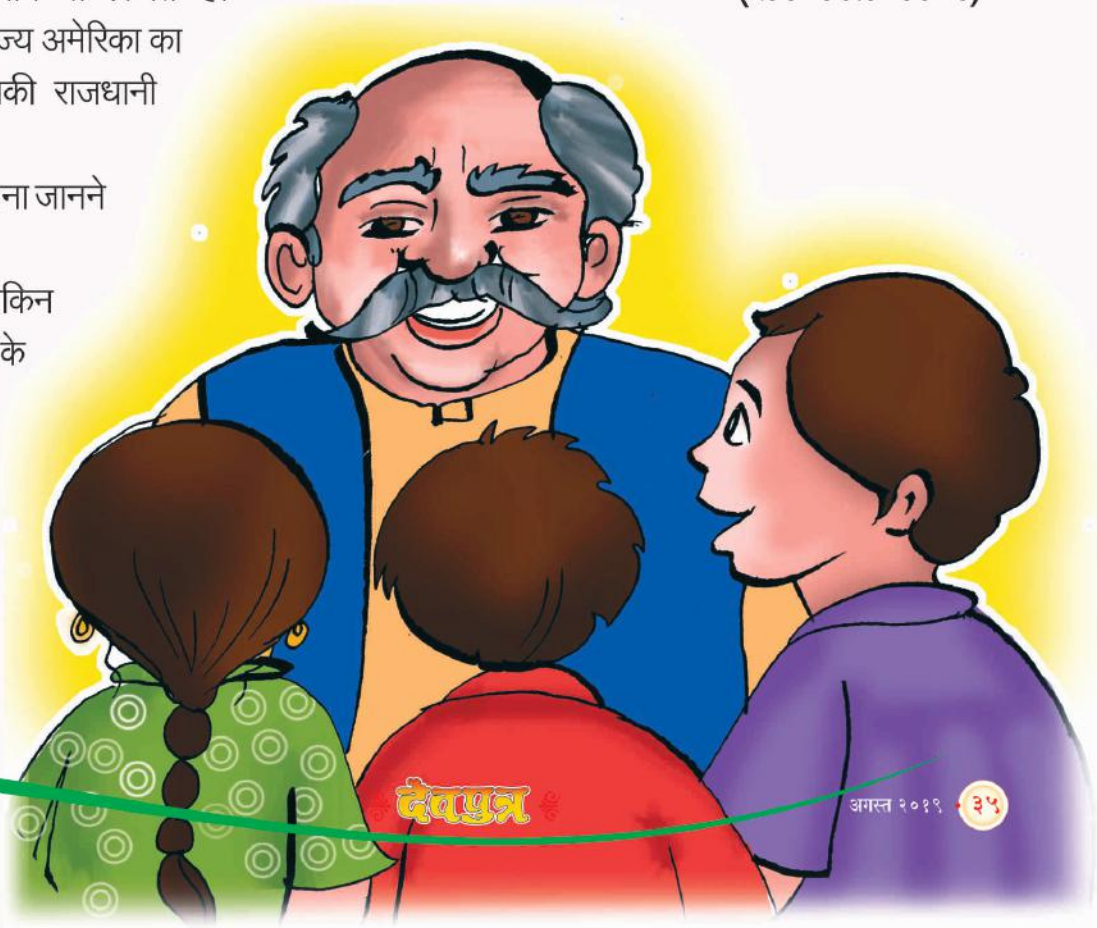

मेरी मैया

कविता : सदाशिव कौतुक

मेरी मैया- मेरी मैया
मुझको ला दे प्यारी गैया

प्रातः उठ कर खेलूंगा
दूध गाय का पी लूंगा
बलवान बनेंगे बहना-भैया
मेरी मैया- मेरी मैया
मुझको ला दे प्यारी गैया।

लाकर दूंगी चारा ताज़ा
फिर बजाऊँ बंशी बाजा
चिड़िया चहके और पपैय्या
मेरी मैया- मेरी मैया
मुझको ला दे प्यारी गैया।

बछड़ा उसका रम्भाएगा
गीत हमारे संग गाएगा
नाचेंगे हम ताता-थैया
मेरी मैया- मेरी मैया
मुझको ला दे प्यारी गैया।

नदी कुए पर ले जाऊँगा
फिर मैं उसको नहलाऊंगा
बोलेगी दैयारी दैया
मेरी मैय्या- मेरी मैया
मुझ को ला दे प्यारी गैया।

● इन्दौर (म.प्र.)

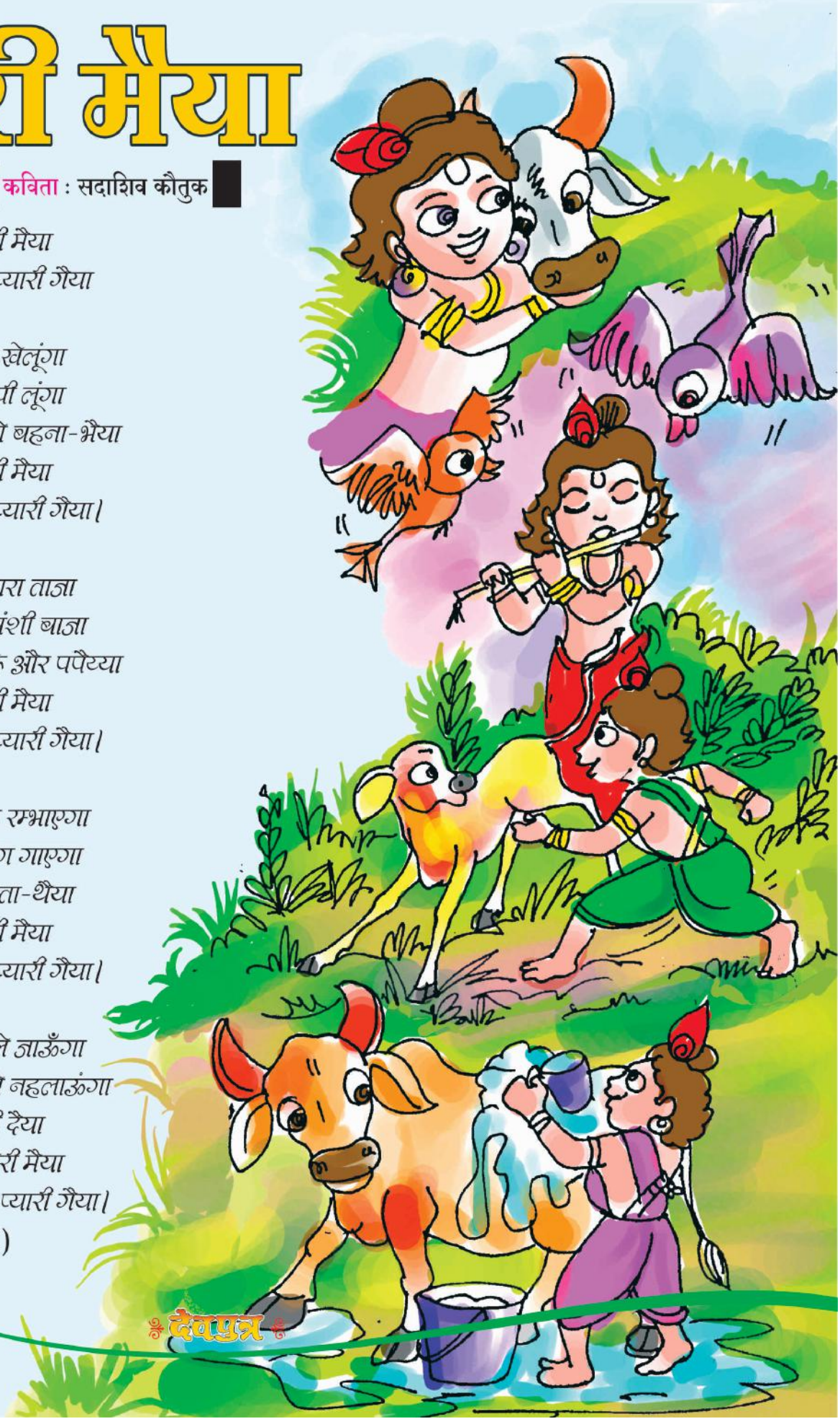

खत्म हो गया जेब खर्च

कविता : डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल

जेब खर्च सब खत्म हो गया
दूर बहुत पहली तारीख।

कैसे लाऊँ बाल पत्रिका
कैसे गेम वीडियो लाऊँ,
कैसे कैरम बोर्ड खरीदूँ,
कैसे बैट बॉल मँगवाऊँ,
इन्द्रधनुष जैसे सतरंगे
सुंदर स्वप्न रहे हैं चीख।

फल मौसमी चिढ़ाने बैठे
लाज दोस्तों में आती है,
पिकनिक पर जाऊँ तो कैसे
चिन्ता मन को तड़फाती है,
नीरस-नीरस लगती सचमुच
लंबी सी रसवाली ईख।

ताला लगा मुखों पर बैठी
अपनी सारी ही अभिरुचियाँ
कुतर गयी खुशियों की चादर
महँगाई की सब गिलहरियाँ,
हमें न कोई डाँट पिलाए
हमें न कोई दे अब सीख।

भाव वस्तुओं के देखो तो
आसमान को छूते जाएँ
लेकिन प्यारे-पूज्य पिताश्री
जेब खर्च क्यों नहीं बढ़ाएं
जेब खर्च की माँग बन गई
मानो पानी कोई भीख।

● गुरुग्राम (हरियाणा)

॥ स्तम्भ ॥

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

संकलित

श्री लोकमान्य तिलक विनोदी स्वभाव के थे। एक बार अपने बच्चों में बैठे वे चाय पी रहे थे। बच्चे–बच्चियों की और उनके पिता श्री लोकमान्य की बातचीत कुछ इस तरह हुई–

बच्चा– बाबा, हम तो चाय के साथ बिस्कुट खाते हैं, आप चाय के साथ कुछ नहीं खाते?

बाबा– कौन कहता है कि मैं कुछ नहीं खाता। मैं भी खाता हूँ।

बच्चा– हमें तो नहीं दिखता, क्या खाते हैं आप?

बाबा– अरे, मैं रोज चाय के साथ समाचार पत्रों में छपी विरोधियों की गालियाँ खाता हूँ।

*****

बाल गंगाधर तिलक सन १९१७ के बम्बई कांग्रेस अधिवेशन में जो कि नासिक में हो रहा था, भाग ले रहे थे।

अधिवेशन में मुम्बई के सभी बड़े नेताओं के भाषण हुए। एक दिन अधिवेशन में दादा साहब खापड़े और दादा साहब केलकर के स्वराज्य पर लम्बे–लम्बे भाषण हुए जिसमें काफी समय लग गया। और श्रोतागण ऊब गए। तभी तिलक जी मंच पर आए और बोले– ''अब तक आप दो दादाओं के उपदेश सुन रहे थे, अब मैं बाल (बालक) आपको क्या उपदेश दे सकता हूँ।'' यह सुनते ही सभा में कहकहा लग गया।

कभी नहीं झुकने वाले

कविता : प्रमोद सोनवानी

रोक सको तो हमें रोक लो,
हम हैं न रुकने वाले।
जायेंगे दौड़े सरहद पर,
कभी नहीं झुकने वाले।।

गोली दागेंगे दन-दन-दन,
दुश्मन मार भगायेंगे।
भारत माँ की सेवा की खातिर,
आगे बढ़ते जायेंगे।।

बढ़े चलेंगे, नहीं रुकेंगे,
देश प्रेम के हम मतवाले।
रोक सको तो हमें रोक लो
कभी नहीं हम झुकने वाले।।

● पड़िगांव (छ.ग.)

साथ

चित्रकथा-

रात के वक्त एक चोर किसी घर में घुसा.
आहट पाकर पालतू कुत्ता भौंकने लगा.
चोर ने कुत्ते की ओर रोटी फेंक दी -
श्.श्.श चुप..
?
लेकिन कुत्ता झपटा और उसने चोर का पैर काट लिया -
आह!. मैंने तुझे रोटी दी और तूने मुझे ही काट लिया?
कुत्ते ने कहा -
तुमने मुझे एक बार रोटी दी और चाहा कि मैं तुम्हारा साथ दूं..
पर जरूरी यह है कि पहले मैं अपने उस मालिक का साथ दूं जो मुझे सैंकड़ों बार रोटी खाने को दे चुका है.

सबसे अधिक पानी

आलेख : ओमप्रकाश क्षत्रिय 'प्रकाश'

कुंए की चिड़िया और तालाब की चिड़िया के बीच बातें हो रही थी। वह धीरे–धीरे विवाद में बदल गई। कुंए की चिड़िया का कहना था– ''मैं जहाँ रहती हूँ वहाँ संसार का सबसे अधिक पानी भरा है। उतना पानी संसार के दूसरे स्थान पर कहीं नहीं मिलता है।''

चूंकि तालाब की चिड़िया ने कुंआ देख रखा था। वह बोली– ''अरे नहीं नहीं। तुम गलत बोल रही हो। सब से अधिक पानी मेरे तालाब में भरा हुआ है। इस से अधिक पानी और कहीं नहीं हैं।''

इस पर दोनों में विवाद छिड़ गया। दोनों अपनी अपनी बात पर अड़ी हुई थी। कोई किसी की बात नहीं मान रही थी।

तभी वहाँ एक बगुला आ कर बैठ गया। वह बोला– ''अरे! तुम आपस में क्यों लड़ रही हो? क्या बात है।''

इस पर कुंए वाली चिड़िया बोली– '' मैं इस से कह रही हूँ कि संसार में सब से अधिक पानी मेरे कुंए में भरा हुआ है। मगर, यह मानती ही नहीं। इस का कहना है कि इस के तालाब में संसार का सबसे अधिक पानी भरा हुआ है।''

''हाँ यह बात सही है, मेरे तालाब में सबसे अधिक पानी भरा हुआ है।'' तालाब वाली चिड़िया बोली, यह कुंए की मेंढक की तरह बोल रही है इस ने कभी कुंए से बाहर निकल कर संसार को ठीक से देखा नहीं है। इसलिए उसे लगता है कि संसार में सब से अधिक पानी कुंए में भरा हुआ है।''

''ओह! यह बात है, ''उन की बात समझकर बगुला बोला, ''तुम दोनों को शायद यह पता नहीं है कि संसार का सबसे अधिक पानी मेरी नदी के पास बहता रहता है। उतना पानी संसार में किसी के पास नहीं है।''

यह सुन कर दोनों चिड़ियाएं चकित रह गई। वे समझ नहीं पा रही थी कि उन के पास संसार का सबसे अधिक पानी नहीं है, मगर यह किसी नदी का नाम ले रहा था चूंकि चिड़िया ने कभी नदी नहीं देखी थी। इसलिए कुंए वाली चिड़िया बोली– ''हम कैसे मान ले कि तुम्हारी नदी के पास अधिक पानी है?''

''हाँ, हाँ यह ठीक कह रही है, ''तालाब वाली चिड़िया ने कुंए वाली चिड़िया का समर्थन किया। तब बगुला बोला, ''चलो! चल कर देख लेते हैं किस के पास कितना पानी है?'' यह कहते हुए तीनों वहाँ से उड़े सीधे तालाब के ऊपर से होते हुए नदी की ओर चल दिए।

नदी बहुत लंबी थी उस के पास बहुत सारा पानी था। वह पूरे वेग से बह रही थी। उसका वेग देखकर कुंए वाली चिड़िया

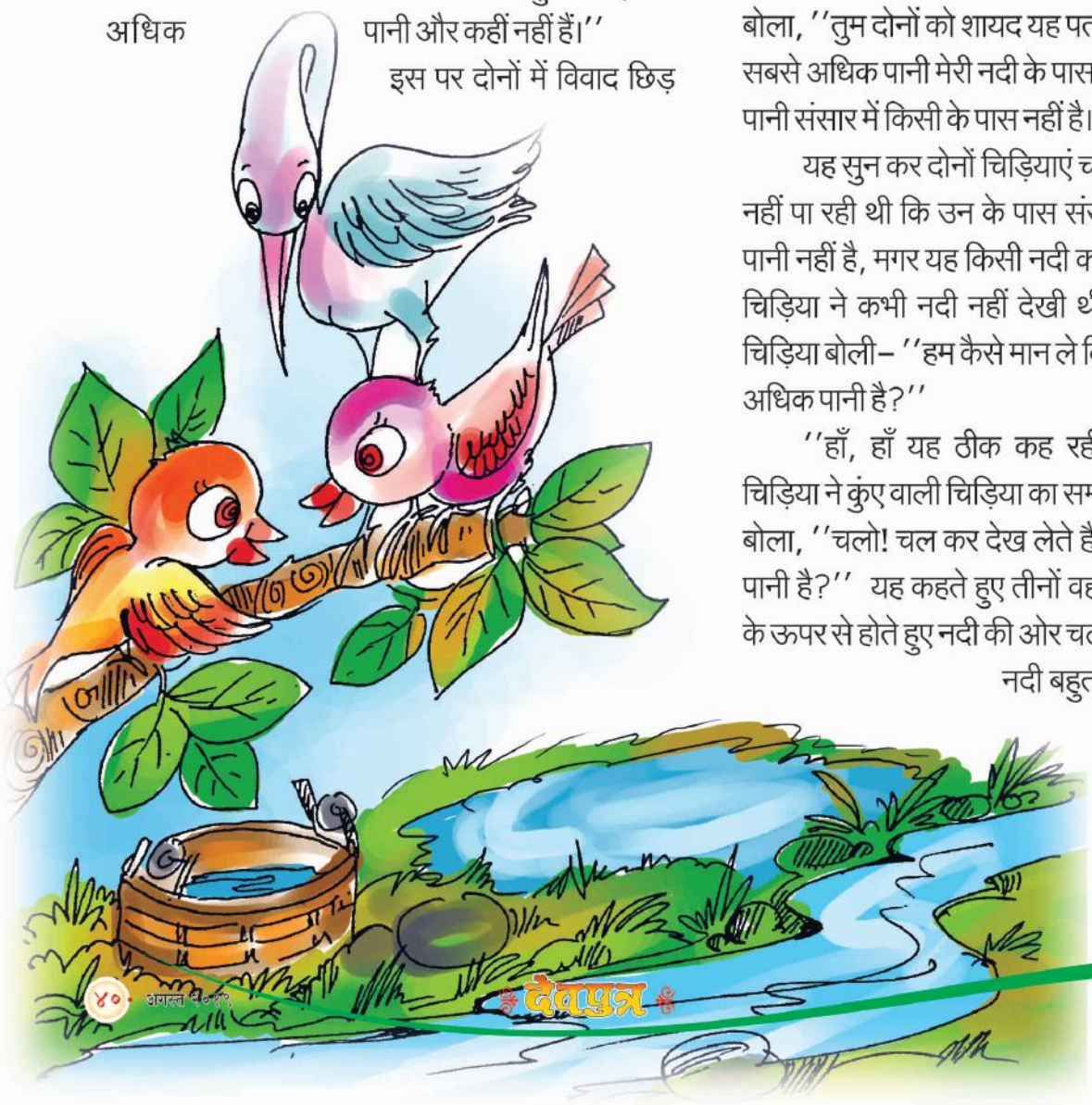

बोली–''बगुला भाई! तुम ठीक कह रहे थे। नदी के पास सबसे अधिक पानी हैं, मैं तो समझ रही थी कि सब से अधिक पानी मेरे कुंए के पास है, मगर मेरी बात गलत थी, मुझ से अधिक पानी तो इस तालाब के पास है।''

इस पर तालाब वाली चिड़िया ने कहा, ''और मैं समझ रही थी कि सब से अधिक पानी मेरे तालाब के पास है।

यह सुनकर तीनो एक दूसरे का मुँह देखने लगे। तब बगुले ने हिरण से पूछा, '' अच्छा तो यह बताओ कि सबसे अधिक पानी किस के पास है?''

''जरा आकाश की ओर देखो, ''हिरण ने ऊँची गरदन करते हुए कहा, ''सब से अधिक पीने लायक पानी उन बादलों के पास है जो अभी अभी बरसने की तैयारी कर रहे हैं।''

यह सुनते ही तीनों ने आसमान की ओर देखा। वहाँ ढेर सारे काले काले बादल उमड़–घुमड़ रहे थे।

''हाँ तुम ठीक कहते हो सबसे अधिक पानी बादल के पास है, ''बगुले ने बादल की ओर देख कर कहा तो वहीं पेड़ पर बैठा हुआ सारस बोला, ''तुम सही कह रहे हो। मगर क्या तुम्हें पता है कि ये बादल इतना पानी कहाँ से लेकर आते हैं?''

तीनों को इस बात का पता नहीं था। ये बादल कहाँ से आते हैं, इसलिए तीनों ने अपनी गरदन नहीं में हिला दी। कारण वे कभी अपने सीमित क्षेत्र से बाहर नहीं गए थे।

तब सारस बोला, ''ये इतना पानी सागर यानी समुद्र से लेकर आते हैं।''

यह सुनकर हिरण बोला, ''तो इसका मतलब यह है कि संसार का सब से अधिक पानी समुद्र के पास है।''

''हाँ'' सारस ने कहा तो यह सुनकर तीनों मुस्करा दिए।

तभी तेज गति से पानी बरसने लगा, तीनों साथी इस से बचने के लिए अपने अपने घर चल दिए।

● रतनगढ़ (म.प्र.)

आंध्र प्रदेश का राज्यवृक्ष

।। हमारे राज्य वृक्ष ।।

नीम

डॉ. परशुराम शुक्ल

ऊँचे हिम पर्वत का पौधा,
रूप झाड़ियों वाला।
मूलरूप से सिक्किम का यह,
पौधा बड़ा निराला।
धीरे-धीरे विकसित होता,
और फैलता जाता।
दस वर्षों में कठिनाई से,
पाँच फुटा हो पाता।
एक तना पहले उगता फिर,
कई तने हो जाते।
हरे रंग के पत्तों से ये,
सब के सब भर जाते।
आते ही गर्मी का मौसम,
फूल अनोखे आते।
घंटी जैसा रूप दिखाकर,
बच्चों को ललचाते।
रूप बदल कर फिर खिलते ये,
रंग गुलाबी पाते।
अपनी सुन्दर छटा दिखा कर,
वन उपवन महकाते।

● भोपाल (म.प्र.)

स्वस्थ सभी हम भारत में

कविता : मनमोहन गुप्ता 'अभिलाषी'

स्वच्छ रहें सब हमारे भाई
बीमारी नहीं आए।
खाना-खाने जब भी बैठें
अम्मा हाथ धुलाए।।
रोज करें स्नान सभी हम
फिर हो शाला जाना
भूलें नहीं छींक आने पर।
हम रूमाल लगाना ।
बचें धूल-दुर्गन्ध सभी से
स्वच्छ रखें अपने को,
घूमें सुबह बगीचे जाकर
साकार करें सपने को।
कॉलोनी को स्वच्छ रखें सब
मिल करके श्रमदान,
हो निर्माण स्वच्छ भारत का
सफल करें राष्ट्र-अभियान।
जन-जागृति हम पैदा करके
स्वच्छ रखें सब मन को,
जाति धर्म का मैल हटाकर
स्वस्थ रखें जन-जन को।
कोई भी अवरोध न होगा
प्रगति शिखर मारग में,
स्वच्छ रहेंगे तभी तो होंगे
स्वस्थ सभी भारत में।

● भरतपुर (राज.)

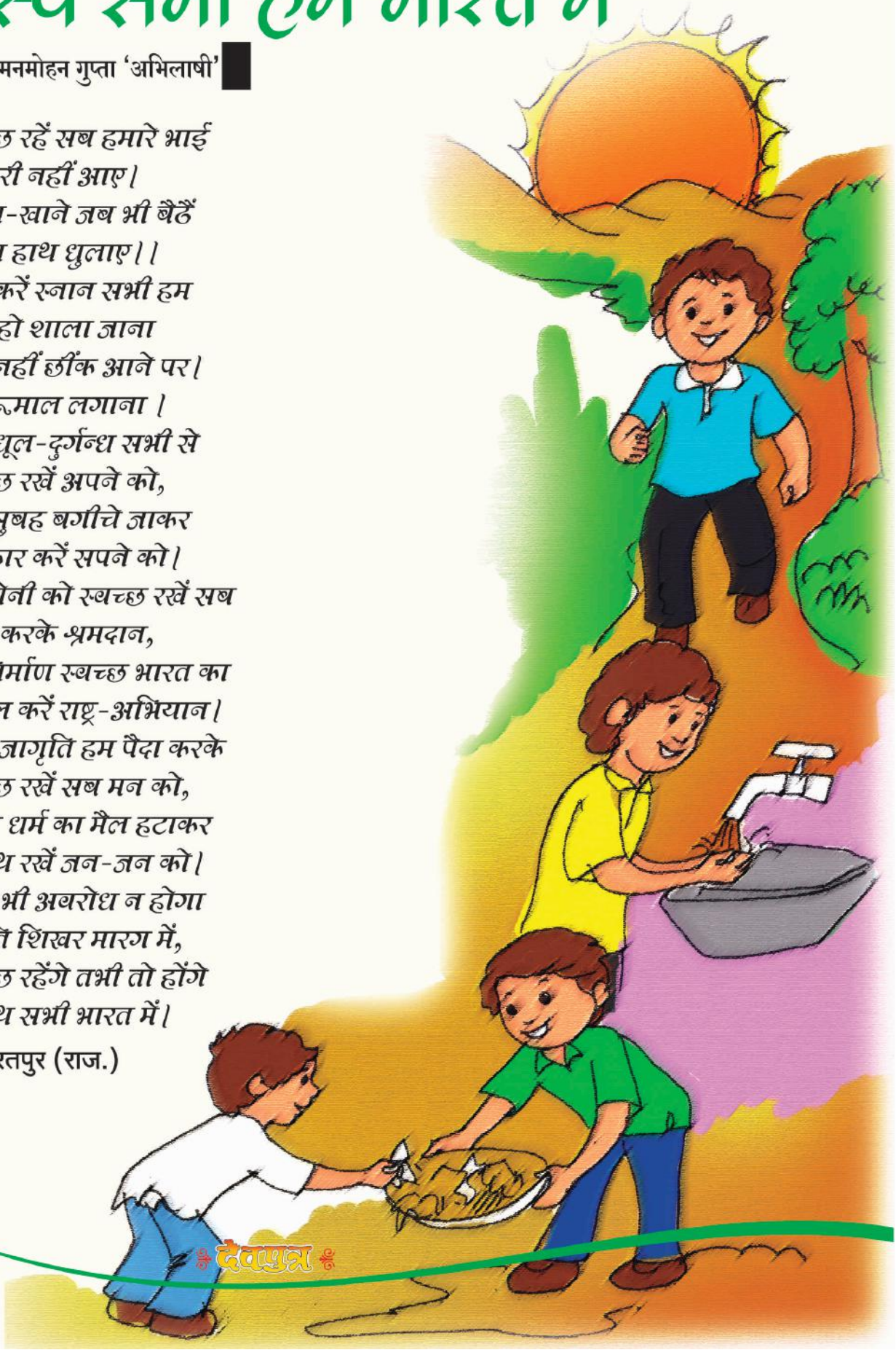

छः अंगुल मुस्कान

भिखारी (सेठ जी से) - महोदय मैं कोई मामूली भिखारी नहीं हूँ। मैंने पैसा कमाने के १०० तरीके नामक पुस्तक लिखी है।

सेठ जी - फिर भी भीख मांगते हुए तुम्हें शर्म नहीं आती।

भिखारी - नहीं क्योंकि उस किताब में बताया गया यह सबसे आसान तरीका है।

*****

एक दिन गजोधर गर्मी में घर से बाहर जाने लगा तो उसका मित्र उससे बोला- अपना खास ख्याल रखना, पानी ज्यादा पीना, खाना कम खाना। और सबसे जरूरी सिर को ढंक कर रखना, क्योंकि भूसे में आग बहुत जल्दी लगती है।

*****

संजय ने एक डूबते हुए आदमी को छलांग लगाकर बचा लिया, लेकिन कुछ ही देर बाद उसे कुएं में धक्का दे दिया। उसकी पत्नी ने पूछा कि तुमने ऐसा क्यों किया?

संजय - तुम खुद ही तो हर समय कहती रहती हो कि नेकी कर कुंए में डाल।

शिक्षक एक शरारती बच्चे से - अपना हाथ अपने सिर पर फेरो, एक बार फिर से फेरो, अब एक बार और सिर पर फेरो। अब तुम्हें यकीन हो गया कि गधे के सिर पर सींग नहीं होते।

*****

शांतनु मित्र से - तुम एक बार में कितने आदमी उठा सकते हो?

मित्र - दो

शांतनु - तुमसे बहादुर तो हमारा मुर्गा है वे सुबह सारे गांव को उठा देता है।

आओ पता करें।

बच्चो! आपने यह अंक ध्यान से पढ़ा है तो बताओ निम्नांकित शब्द अंक की किस रचना में आए हैं।

घनिष्ट मित्र, बलिवेदी, गुमसुम, बर्लिन सम्मेलन, दैया री दैया, अनायास, गर्मी का मौसम, लत, सूडान, मित्रता दिवस

पुस्तक परिचय

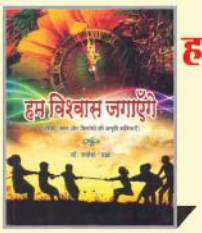

हम विश्वास जगाएंगे

मूल्य ४९५/-

पृष्ठ १३६

प्रख्यात बाल साहित्य सर्जक **डॉ. राकेश चक्र** की दो महत्वपूर्ण कृतियाँ शिशुओं, बालों और किशोरों के लिए १०० से अधिक रोचक बाल गीतों का पिटारा।

प्रकाशन – समाज शिक्षा संस्थान, ए–५५, गली नं. ६ जगतपुरी एक्स. दिल्ली ९३

हम आजादी के बच्चे हैं

मूल्य ४९५/-

पृष्ठ १३६

बच्चों की १०८ बालगीत रचनाएं जिनमें विभिन्न विषयों पर रोचक प्रस्तुति मनभावन बन पड़ी है।

प्रकाशन – लवकुश सिंह सेहबरपुर, रतनपुरा जिला मऊ २२१७०६ (उ.प्र.)

दादी कहती

मूल्य १२०/-

पृष्ठ ६४

विख्यात बाल साहित्य शिल्पी **श्री पवन पहाड़िया** द्वारा रचित ४७ बाल कविताओं का बहुरंगी भाव भरा सुन्दर कविता संग्रह।

प्रकाशन – विभोर प्रकाशन, २४२ सर्वधर्म कालोनी, सी–सेक्टर, कोलार रोड़, भोपाल ४६२०४२ (म.प्र.)

पंखिया

मूल्य १००/-

पृष्ठ ४८

प्रसिद्ध बाल रचनाकार **डॉ. आर. पी. सारस्वत** का २४ बाल कविताओं का सचित्र संग्रह जिसमें बालमन की नई उड़ानों से परिचित होंगे आप।

प्रकाशन – नीरजा स्मृति बाल साहित्य न्यास, एन १६७–१६८, पैरामाउण्ट ट्यूलिप, दिल्ली रोड़, सहारनपुर ०१ (उ.प्र.)

ऊँचे सपने देखो

मूल्य ९९/-

पृष्ठ ३२

बाल रचनाकार **श्री हर्ष सक्सेना** की डा. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम के दर्शन से प्रेरित १५ बाल कहानियों का सम्पूर्ण बहुरंगी रोचक संग्रह।

प्रकाशन – मौसम बुक्स, जे.के. जैन ब्रदर्स की एक इकाई, सल्तानिया रोड़, मोती मस्जिद के सामने, भोपाल (म.प्र.)

छेना और रसगुल्ला

मूल्य २०/-

पृष्ठ ३२

बाल साहित्यकार **श्री राजकुमार सचान** द्वारा लिखित २४ रसभरी आकर्षक भावों से ओतप्रोत बाल कविताएं।

प्रकाशन – वी. पी. पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स, डब्ल्यू– २, ८६२ बसंत विहार, नौ बस्ता, कानपुर २१ (उ.प्र.)

सुन्दर रंग भरो

• चांद मो. घोसी

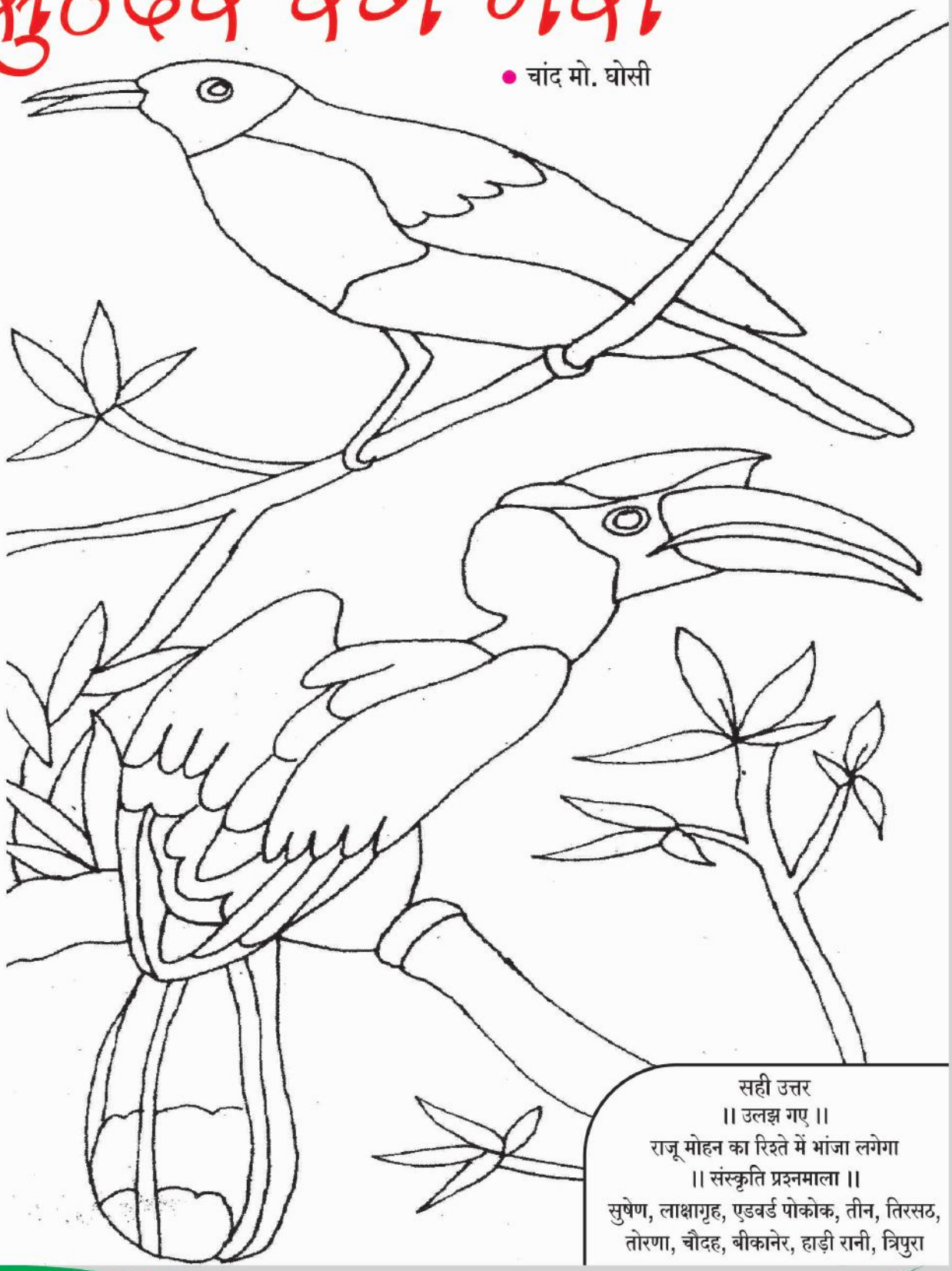

सही उत्तर

|| उलझ गए ||

राजू मोहन का रिश्ते में भांजा लगेगा

|| संस्कृति प्रश्नमाला ||

सुषेण, लाक्षागृह, एडवर्ड पोकोक, तीन, तिरसठ, तोरणा, चौदह, बीकानेर, हाड़ी रानी, त्रिपुरा

सोहम् और सलोनी

कहानी : सुषमा दुबे

''सोहम्! सोहम्!'' सोहम् की माँ रश्मि ने उसे झंझोड़ते हुए हिलाया।

''क्या है माँ?'' बिना टी.वी. से नजरे उठाए वह झुँझलाकर बोला।

''बेटा! मैं आधे घंटे पहले तेरा भोजन गरम करके रख गई थी तूने उसे छुआ तक नहीं? और गृहकार्य कब करेगा। तू देख ६ बज गए हैं।

''जब भूख लगेगी मैं खा लूँगा, आप अपना काम करो।''

माँ ने गुस्से में टीवी बंद कर दिया। ''क्या दिनभर पढ़ो-पढ़ो, खाना खाओ'' कहकर उसने माँ के मोबाइल में वीडियो देखना शुरु कर दिया। माँ ने वो भी ले लिया। उसके बाद सोहम् का रोना-धोना शुरू हो गया। उसके रोने-चिल्लाने का शोर आसपास के ३-४ घरों तक पहुँचता था। इसी डर से माँ ने उसे अधिक टोकना बंद कर दिया था। घर के सब लोग उसके इस स्वभाव से परेशान हो गए थे। विद्यालय से आकर वह बस्ता पटककर टीवी लगा कर बैठ जाता था। ३-४ घंटे लगातार टीवी देखना उसका स्वभाव बन गया था।

इसी कारण से उसे १०-११ साल की आयु में मोटा चश्मा लग चुका था। इन दिनों सोहम् के मामा की बेटी सलोनी गाँव से उनके घर रहने आई हुई थी। उसकी २ महिने कोचिंग क्लासेस थी शहर में। उसे सोहम् की आदतें देखकर बहुत आश्चर्य और दुःख होता था। उसने अपनी बुआ और फूफाजी को कई बार कहा कि इसकी आदत क्यूं नहीं बदलते? लेकिन वे सोहम् के आगे हथियार डाल चुके थे। सलोनी सोच में पड़ गई कि सोहम् का भविष्य क्या होगा?

आज भी सोहन विद्यालय से घर आया और टीवी लगाकर बैठ गया था। जब भूख लगी तो उसने प्रतिदिन की तरह आसपास थाली ढूँढी लेकिन आज माँ ने भोजन नहीं रखा था। संभवतः भूल गई होगी वह उठा और माँ के कमरे में जाकर बोला ''माँ! माँ! खाना दो न भूख लगी है। माँ अपने मोबाइल में लगी रही जैसे कुछ सुना ही न हो।'' उसने २-३ बार बोला फिर जाकर टीवी देखने लगा। थोड़ी देर बाद वह फिर माँ के पास आया। माँ ने उस पर ध्यान नहीं दिया। वह दादी के पास गया। वे कोई धार्मिक पुस्तक पढ़ रही थीं। उसे देखकर दादी ने पुस्तक को और पास कर लिया और जोर-जोर से पाठ करने लगी।

तभी पिताजी घर आ गए, लेकिन उन्होंने प्रतिदिन की तरह सोहम् को गोदी में नहीं उठाया। बात भी नहीं की। रश्मि को आवाज देकर अपना लैपटाप खोलकर काम करने लगे। सोहम् को बड़ा आश्चर्य हुआ। माँ ने उठकर पिताजी को चाय नाश्ता दिया और फिर अपने मोबाइल में कुछ देखने लगी। ''माँ! माँ! मुझे भी नाश्ता दो ना। माँ ने उसे घूरा और फिर मोबाइल में कुछ टाइप करने लगी। फिर वह पिताजी से बोला ''पिताजी मुझे भी भूख लगी है।'' ''तो खा ले।''

कहकर वह अपना काम करते रहे। तभी उसका बड़ा भाई अनूप और सलोनी भी घर में प्रविष्ट हुए। आज सलोनी दीदी ने न तो उसके गाल पर प्यार किया और न ही भैया ने उसकी चिकोटी ली। घर का बदला हुआ दृश्य देखकर सोहम् को कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह सलोनी दीदी से कुछ बात कहने ही वाला था कि अनूप का हाथ पकड़कर ऊपर पिताजी के कमरे में चली गई। वहाँ जाकर दोनों टीवी चालू करके सोफे पर बैठ गए।

अब सोहम् कभी इधर, कभी उधर कभी ऊपर कभी नीचे जाकर सबसे बात करने का प्रयत्न करने लगा। कोई उसे न डांट रहा था तो न कोई भाव ही दे रहा था। अब वह जोर जोर से रोने लगा था... ''कोई मुझ पर ध्यान ही नहीं दे रहा है।'' धीरे-धीरे सब उसके आसपास इकट्ठा हो गए।

पिताजी ने उसे गोदी में उठाया और बोले ''क्या हुआ बेटा?'' ''पिताजी देखो ना कोई मुझसे बात ही नहीं कर रहा, सब अपने अपने काम में लगे हैं।''

तभी सलोनी बोल पड़ी, ''हमें भी ऐसा ही महसूस होता है जब तुम विद्यालय से आकर सीधे टीवी में घुस जाते हो। कोई तुमसे बात करने का प्रयास भी करता है तो तुम सीधे मुँह उत्तर भी नहीं देते हो। आज एक दिन हमने तुमसे बात नहीं की तो तुम रोने धोने लगे, और पूरा घर सर पर उठा लिया? हर बात की एक सीमा होती है एकाध घंटा टीवी देख लिया ठीक है। तुम तो लगातार ३-४ घंटे यही करते हो। माँ सुबह से तुम्हारे विद्यालय से आने का रास्ता देखती रहती है। वह तुम्हारे लिए परिश्रम से भोजन बनाकर रखती है। वह जानना चाहती हैं कि तुम उसे बताओ कि दिनभर विद्यालय में तुमने क्या-क्या किया? पिताजी कार्यालय से आकर तुमसे बातें करना चाहते हैं। भैया तुम्हारे साथ बगीचे में खेलना चाहता है। दादी चाहती है तुम उनके पैर दबा दो और साथ ही साथ उनसे कहानियाँ सुन लो। मुझे आए १५ दिन हो गए तुमने एक घंटा भी मेरे साथ नहीं बिताया। लेकिन तुम हो कि टीवी ही तुम्हारा सब कुछ हो गया।''

सोहम् नीची आँखें किए ध्यान से सुनता रहा। फिर नटखटपन से बोला, ''दीदी! आपका भाषण खत्म हो गया हो तो आज कहीं बाहर घूमने चले?'' ''क्यों? आज टीवी खराब हो गया है क्या?'' अनूप उसे चिढ़ाकर बोला। सोहम् हँसकर बोला, नहीं आज से घर में टीवी नहीं चलेगा। क्या तू और टीवी न देखें सब एक साथ चिल्लाये। सोहम् हँस कर बोला ''मेरा मतलब है पहले मैं घर में सबसे बाते करूंगा, फिर समय बचा तो ही टीवी चलेगा।''

अब दादी ने उसे प्यार से गले लगाते हुए कहा- ''कई बार तुम्हें पता ही नहीं होता कि तुम्हारे टीवी और मोबाइल कि लत से घर वाले कितने परेशान होते होंगे? इस प्रकार का स्वभाव न केवल दूसरों को परेशानी में डालता है, बल्कि इससे हमारे स्वास्थ्य, आँखों और दिमाग पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। हमारी पढ़ाई तो प्रभावित होती ही है। इन चीजों का आवश्यकता अनुसार ही उपयोग करना चाहिए, इतना ध्यान रहे कि इनकी आदत कहीं लत में न बदलने पाये।''

● **इन्दौर (म.प्र.)**

चित्र बनाओ ● राजेश गुजर

बच्चो, गौ माता का चित्र आसानी से बनाओ और रंभ भरो।

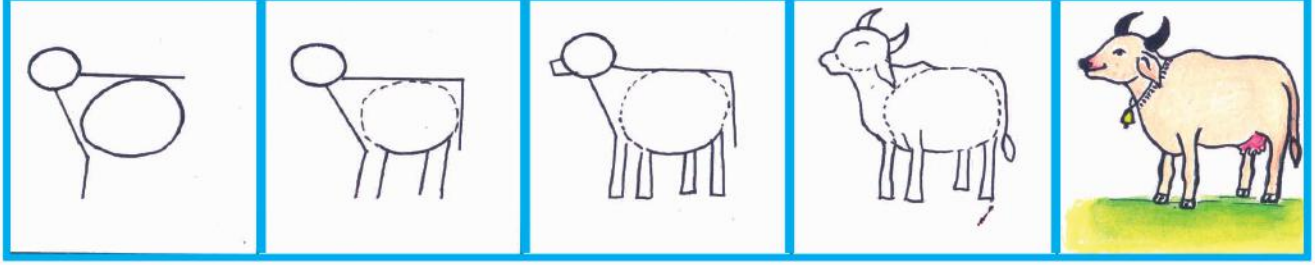

स्वंय बनें वैज्ञानिक

● आलेख : डॉ. राजीव तांबे
● अनुवाद : सुरेश कुलकर्णी

बाल मित्रो,

हम घर पर ही यह प्रयोग करेंगे इस बार सीखते हैं कि सेफ्टी पीन और आलपिन कैसे उछल कूद करती हैं।

लगने वाली सामग्री, जो घर पर ही उपलब्ध रहती हैं–

२ सेफ्टी पिन
४ आलपिन
१ मीटर धागा
कैंची
मेग्नेट (चुम्बक)

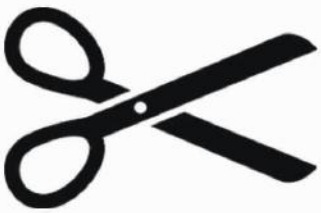

तो फिर शुरू करते हैं अपना नया प्रयोग –

हमारे पास एक मीटर धागा है, उसके चार समान टुकड़े करें।

एक टुकड़े को एक सेफ्टी पिन बांध दें।

दूसरे टुकड़े को दूसरी सेफ्टी पिन बांध दें।

तीसरे टुकड़े को २ आलपिन बांध दें।

चौथे टुकड़े को २ आलपिन बांध दें।

ठीक है!! इतना काम हो गया? बहुत अच्छा।

अब इन टुकड़ों को टेबल की किनार से सेलोटेप से चिपका दो, जिससे वे लटकते रहेंगे। मतलब धागे की एक एक किनार सेलो टेप से चिपकाना। बहुत आसान सा काम है। आपने कर लिया होगा।

अब आपको अपने हाथ में मेग्नेट लेना है। मुट्ठी में रखना है। प्रयोग को हमने जादू कहा है इसलिए मेग्नेट को मुट्ठी में रखा है यह नहीं दिखे इसकी सावधानी रखें।

अब आपको अपना हाथ एक निश्चित अंतर से जहां धागा लटकता है उसके पास ले जाना है। आप देखेंगे कि, आलपिन और सेफ्टी पिन आपकी हाथ की तरफ खिंची चली आ रही है अर्थात आकर्षित हो रही है। आपको अब अंदाज आ जाएगा कि आप जैसे जैसे मुट्ठी को धागों की तरफ ले जाएंगे। आलपिन और सेफ्टी पिन उछलकूद करने लगेंगे। अगर आप तेजी से ले जायेंगे तो वे अपनी उछलकूद तेज कर देंगे। आपका यह प्रयोग सफल हुवा तो आपके दोस्तों को अवश्य बताना।

यह क्यों होता है?

मेग्नेट, हमेशा लोहा, निकल और कोबाल्ट इन धातुओं को आकर्षित करता है। इन धातुओं के मिश्रण से भी बने चीजों को मेग्नेट अपनी ओर खींचता है। इसलिए उपरोक्त प्रयोग में आलपिन और सेफ्टि पिन मुट्ठी में बंद मेग्नेट की ओर उछलकूद करती है।

दोस्तो, अब आप एक काम करें, मेग्नेट के प्रयोग से यह देखें कि यह कहाँ कहाँ चिपकता है, दरवाजे खिड़कियां, ग्रील आदि अपनी खोज जारी रखो तब तक फिर मिलने को आ रहा हूँ, अगले प्रयोग के साथ।

● पुणे (महा.)

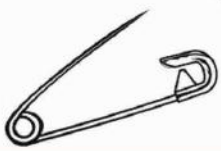

अंबर की रजाई!

कविता : डॉ. अनुपमा गुप्ता

सर्दियों की ज्यों रजाई
बारिशों में बन रही है
व्योम में बिस्तार लेकर
हर दिशा में तन रही है!
कोई चुनता है बिनौले
बूँद, ओले, बिजलियों के
कोई देता चादरें
सब रंग ले कर तितलियों के।
इंद्रधनुषी गोट की
आभा धरा तक छन रही है!
तकलियाँ, पूनी खगों की
चोंच में तैयार हैं
कोई धुन-धुन धुन रहा ज्यों
मेघ का अंबार है!
व्योम खुद में है मगन
मिट माघ की अड़चन रही है!
एक रजाई बन रही है।

● बरगवाँ (म.प्र.)

* व्योम=अन्तरिक्ष,
* तकली=धागा कातने का यंत्र,
* पूनी=रुई का गोला
* खग=पक्षी

बिंदु मिलाओ- रंग भरो

• राजेश गुजर

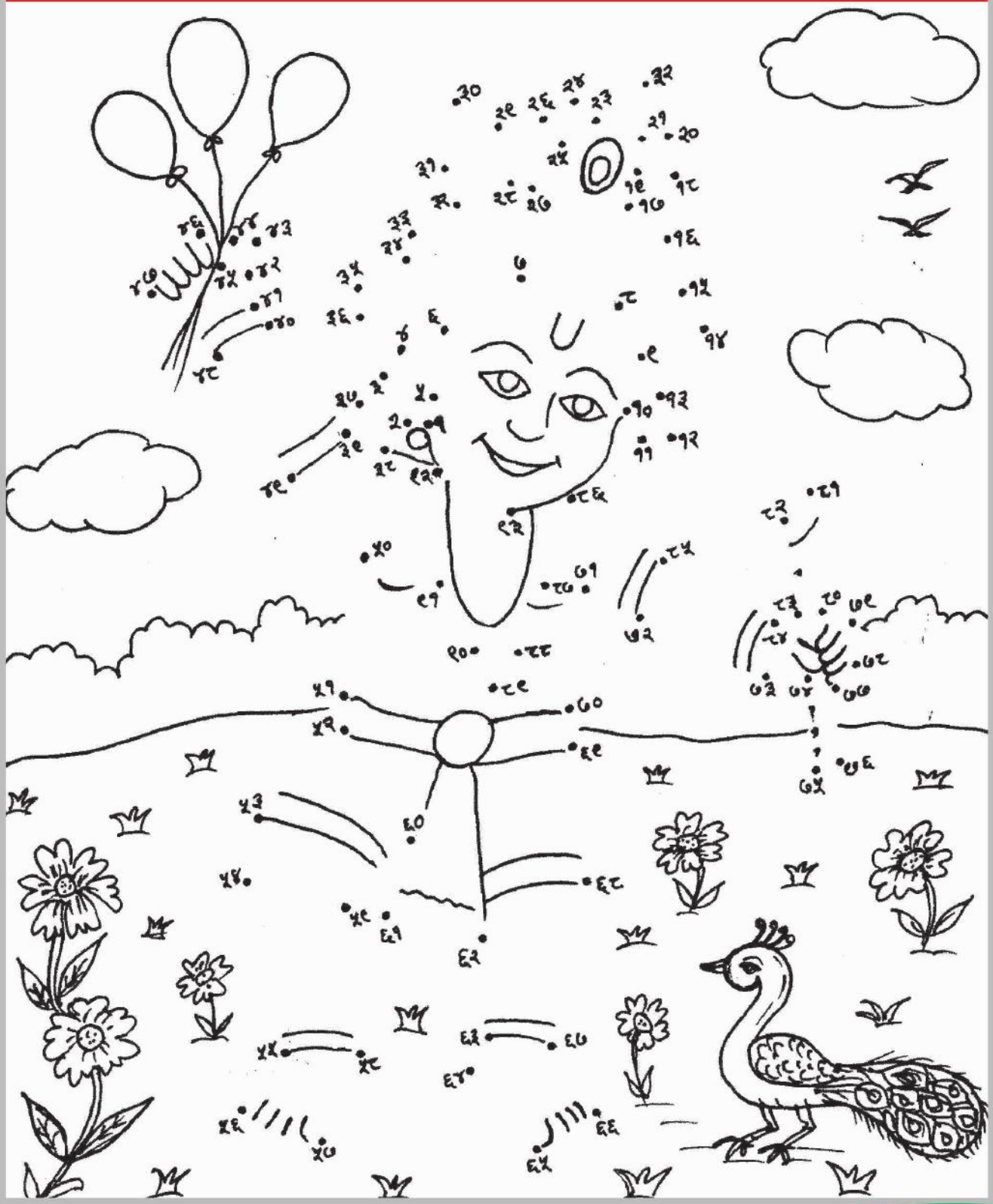

देवपुत्र परिवार-पत्र मेला

बच्चो! हम सबके जीवन में अपनेपन का भाव अपने परिवार से ही प्रारंभ करते हैं। यह वाट्सएप और ई-मेल का युग है ऐसा माना जाता है लेकिन आपकी पुरानी पीढ़ी अर्थात् अनेक के दादा-दादी, नाना-नानी इस नए प्रचलन से अनभिज्ञ हैं ऐसे परिवारजनों के लिए पत्र वर्षों पुराना माध्यम होकर भी उतना ही सशक्त है।

देवपुत्र आपके लिए एक विशिष्ट आयोजन कर रहा है वह है 'देवपुत्र परिवार-पत्र मेला'। इसमें सम्मिलित होने के लिए आपको पाँच पत्र लिखना होंगे।

एक- अपने दादा-दादी को

दो- अपनी माँ को

तीन - अपने आचार्य, दीदी/शिक्षक को

चार- किसी ऐसे व्यक्ति को जो आपके परिवार का सदस्य तो नहीं पर आपके परिवार से उसका संबंध इतना है कि उसे आप पारिवारिक रिश्तों का नाम देकर पुकारते हैं जैसे रिक्शे वाले भैया, फूल वाली अम्मा, सफाई वाली काकी, किराने वाले काका आदि।

पाँच - पाँचवा पत्र लिखिए अपनी भारत माता यानी देश के नाम, इस पत्र में आप देश के लिए क्या करना चाहते हैं अपना वह संकल्प और उसे पूरा करने की आपकी योजना का उल्लेख करें।

पत्र लिखते समय हम चाहते हैं कि आप अंकल/आंटी, सर/मेडम आदि के स्थान पर भारतीय सम्बोधन का उपयोग करें।

पत्र में आप अपने स्वाभाविक विचार लिखें न कि उसे सुने सुनाए, रटे रटाए आदर्श से ठसाठस भर दें। हाँ सहज रूप से आप किसी आदर्श या प्रेरणा से प्रभावित हैं तो उसका उल्लेख किया जाना चाहिए।

- पत्र सुवाच्य अक्षरों में हिन्दी भाषा में लिखा हों।
- यह पत्र लगभग ३०० से ५०० शब्दों में हो।
- प्रतियोगिता केवल अष्टमी से द्वादशी तक अध्ययनरत बच्चों के लिए है। अतः अपनी कक्षा का प्रमाण पत्र अपने प्राचार्य/प्रधानाचार्य से प्रमाणित कर अवश्य भेजिए।
- पत्र हमें ३१ दिसम्बर, २०१९ तक अवश्य प्राप्त हो जाएं।
- अपनी प्रविष्टि (पाँचों पत्रों की एक प्रविष्टि मानी जाएगी)के साथ प्रविष्टि पत्र पृथक से कागज पर स्वयं लिखकर भेजें।

प्रविष्टि भेजने का पता है - संयोजक देवपुत्र, परिवार-पत्र मेला
द्वारा/देवपुत्र, ४०, संवाद नगर, इन्दौर ४५२००१ (म.प्र.)

पत्र का प्रारूप होगा-

श्रीमान संयोजक महोदय,
देवपुत्र परिवार पत्र मेला
इन्दौर

महोदय मैं.....कक्षा .....देवपुत्र द्वारा आयोजित देवपुत्र परिवार पत्र मेला में सहभागी होना चाहता हूँ/चाहती हूँ। मेरी प्रविष्टि (पांचों पत्र) सम्मिलित करें। मेरा पता है -

नाम..... पिता.....

पता.....

पिन कोड ☐☐☐☐☐☐ दूरभाष ☐☐☐☐☐☐☐☐☐☐

हस्ताक्षर प्रतिभागी

प्रत्येक प्रकार के तीन-तीन सर्वश्रेष्ठ पत्र पुरस्कृत किए जाएंगे।

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२० | आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५

प्रकाशन तिथि २०/०७/२०१९ | प्रेषण तिथि ३०/०७/२०१९ | प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात है।

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

विश्व का सर्वाधिक प्रसारित बाल मासिक

देवपुत्र

सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अवश्य देखें

www.devputra.com

एक अंक	२०/- रु.
वार्षिक सदस्यता	१८०/-रू.
त्रैवार्षिक सदस्यता	५००/-रू.
पंचवार्षिक सदस्यता	७५०/-रू.
आजीवन सदस्यता	१४००/-रू.
सामुहिक वार्षिक सदस्यता (कम से कम १० अंक लेने पर)	१३०/-रू. (प्रति सदस्य)

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

- संस्थाओं की आजीवन सदस्यता १० वर्ष रहेगी।
- सामूहिक सदस्यता वाले सारे अंक एक साथ भेजे जाते हैं।
- सदस्यता के लिए ड्राफ्ट/धनादेश 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' के नाम से बनवाइए।
- आनलाईन बैंकिंग से प्राप्त शुल्क की जमापर्ची की छायाप्रति (फोटोकॉपी) भेजना अनिवार्य है।

हमारा विश्वास है कि आपका स्नेह एवं सहयोग पूर्ववत् प्राप्त होता रहेगा।

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना